ओ३म्

अन्य कोई मार्ग नहीं

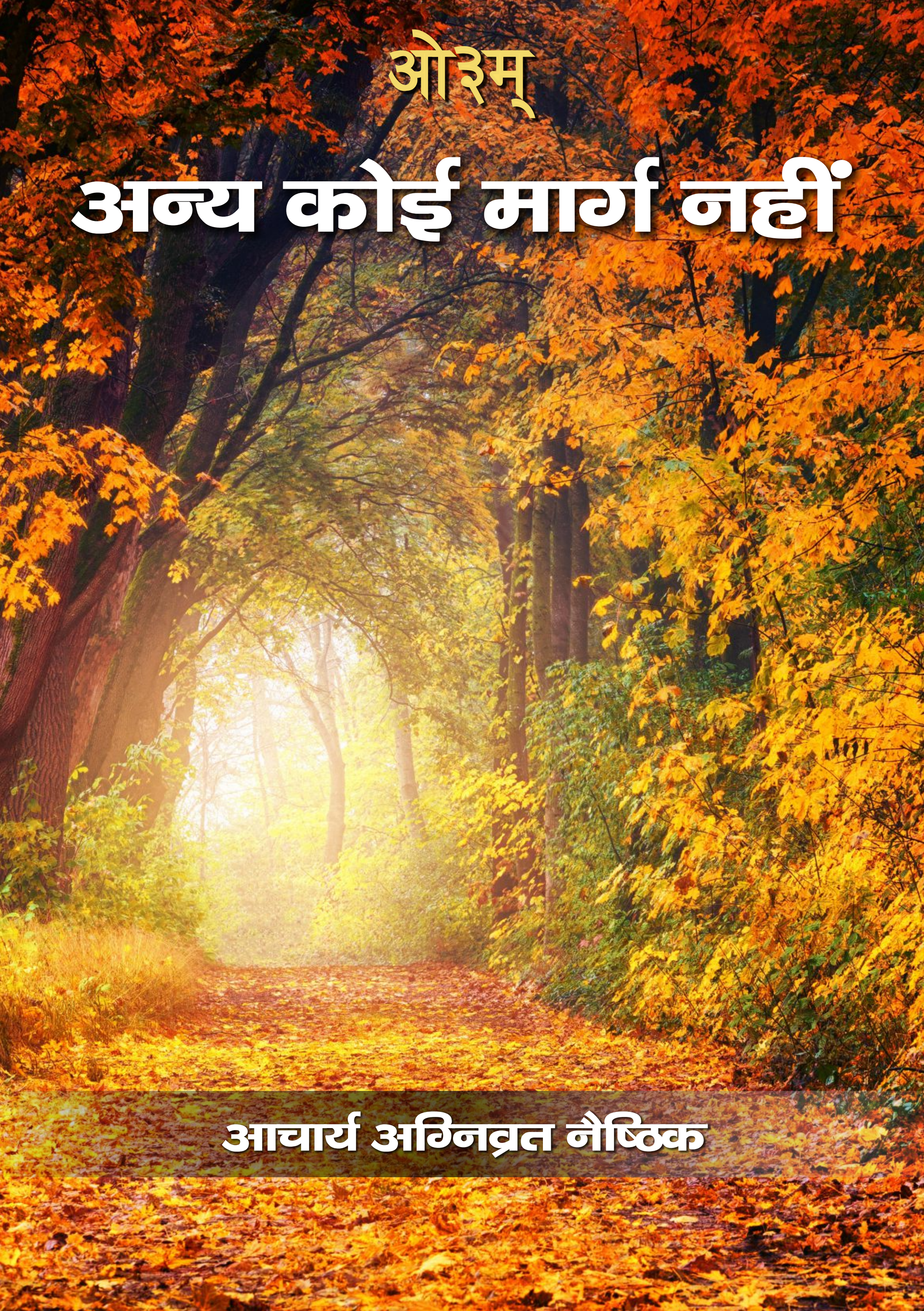

आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक

ओ३म्

अन्य कोई मार्ग नहीं

लेखक

आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक

श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास

श्रावण शुक्ल, पञ्चमी, विक्रम संवत् 2077
25.07.2020

मूल्य - आत्मनिरीक्षण करें, यदि आप सहमत हैं, तो सहयोग एवं सुझाव देवें और यदि असहमत हैं, तो कोई अन्य मार्ग बताने का कष्ट करें।

प्रकाशक

श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास

(वैदिक एवं आधुनिक भौतिक विज्ञान शोध संस्थान)

वेद विज्ञान मन्दिर, भागलभीम, भीनमाल (जालोर)

(राजस्थान) पिन - 343029

ई-मेलः swamiagnivrat@gmail.com

वेबसाईटः www.vaidicphysics.org, www.vedicphysics.org

सम्पर्क सूत्रः - 02969 222103, 9829148400

महर्षि आद्य ब्रह्मा से लेकर..

...दयानन्द पर्यन्त आर्ष परम्परा

अन्य कोई मार्ग नहीं

हमारा गौरवशाली अतीत

प्रिय आर्यजनो! एवं सनातन वैदिक धर्म के अनुयायिजनो! हम सौभाग्यशाली हैं कि हम ऐसे देश में जन्मे, जिसकी पावन धरा पर सृष्टि के आदि में परमपिता परमात्मा द्वारा चार आदि महर्षियों (अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा) को पवित्र वेद का ज्ञान हुआ। इस भूमि पर महर्षि ब्रह्मा, महर्षि मनु, महादेव शिव, भगवान् विष्णु, देवराज इन्द्र, महर्षि वसिष्ठ, महर्षि विश्वामित्र, महर्षि अगस्त्य, महर्षि वाल्मीकि, महर्षि याज्ञवल्क्य, महर्षि भरद्वाज, महर्षि परशुराम, महर्षि ऐतरेय महीदास, महर्षि कणाद, महर्षि कपिल, महर्षि यास्क, महर्षि व्यास एवं ऋषि दयानन्द जैसे अनेक ऋषि भगवन्तों ने जन्म लिया। यहीं राजा इक्ष्वाकु, मान्धाता, हरिश्चन्द्र, भगीरथ, रघु, पृथु, राम, हनुमान्, ययाति, यदु, भरत, युधिष्ठिर, कृष्ण, अर्जुन जैसे क्षत्रिय जन्मे। यहीं सीता, सावित्री, अपाला, घोषा, लोपामुद्रा, अनसूया, रुक्मिणी एवं गार्गी जैसी वेदविदुषियों का अवतरण हुआ। कितनों के नाम यहाँ लिखें, इनके महान् व्यक्तित्व की कल्पना करना भी आज के महाबुद्धिमान् व्यक्ति के लिए सम्भव नहीं है।

सम्पूर्ण वैदिक काल सुख व आनन्द से भरपूर था। आर्यावर्त्त (भारत) सम्पूर्ण विश्व का मार्गदर्शक (गुरु), चक्रवर्ती राष्ट्र एवं सोने की चिड़िया के रूप में प्रसिद्ध था। क्या आपने कभी सोचा कि ऐसा किस कारण था? क्या शक्ति के बल पर अथवा धन के बल पर? नहीं, यह राष्ट्र अपने वैदिक ज्ञान विज्ञान (पदार्थ विज्ञान व आध्यात्मिक विज्ञान), तप व चरित्र के बल पर इस सम्मान को प्राप्त था। महाभारत काल से कुछ पूर्व ही इसका पतन होने लगा, जो महाभारत के पश्चात् धीरे-2 सम्पूर्ण विनाश को प्राप्त हुआ। न केवल इस देश के खण्ड-2 हो गये, अपितु इसकी विद्या-विज्ञान का वैभव, धन, शक्ति सभी कुछ क्षीण होकर विदेशी दासता से ग्रस्त हो गया।

कभी सम्पूर्ण विश्व में सभी मानव वैदिक धर्मी थे, वे भले ही देव हों, दानव हों, गन्धर्व, मनुष्य, वानर, राक्षस, असुर, नाग हों। वेद की समझ व नासमझ के आधार पर क्रमशः आर्य व अनार्य दो भेद थे, परन्तु वेद की निन्दा करने वाला कोई मत-पन्थ-सम्प्रदाय सम्पूर्ण विश्व में महाभारत काल तक कोई नहीं थे, कहीं कोई व्यक्ति अवश्य अपवाद रूप था। सर्वत्र वेदपाठ एवं यज्ञों के स्वाहा के स्वर ही गूंजते थे।

पतन का प्रारम्भ

हाँ, नासमझ अनार्यों में कुकृत्य भी जन्म ले रहे थे, परन्तु सभी वेद की ही जय बोलने वाले थे। परन्तु वेद विज्ञान के लोप के पश्चात् विश्व में नाना प्रकार के अवैदिक मतों ने धीरे-2 जन्म लिया। इनमें से कुछ मत वेद के कुछ विकृत रूप की प्रतिक्रियावश जन्मे, तो कुछ वेद की मिथ्या अर्थ में ग्रहण करने के कारण, तो कुछ चालाक लोगों के स्वार्थ के कारण जन्मे। इसी प्रकार सम्पूर्ण विश्व में नाना भाषाओं, परम्पराओं व सभ्यताओं ने जन्म लिया और वेद के नाम पर मानव में एकत्व का भाव समाप्त हो गया। कुछ सुधारकों ने मानव एकता का प्रयास भी किया परन्तु वे सुधारक अति तपस्वी व पवित्रात्मा होने के उपरान्त भी वेद विद्या में पारंगत नहीं होने से अपने प्रयास में सफल नहीं हो सके, बल्कि उनके अपने भिन्न-2 मत और प्रचलित हो गये। यद्यपि अनेक मतों ने तात्कालिक लाभ इस देश अथवा उन देशों, जहाँ वे जन्मे थे, को हुआ परन्तु अन्ततः मानवता खण्ड-2 अवश्य होती गयी।

आशा की एक अल्पकालीन किरण

ऐसी परिस्थितियों में लगभग 200 वर्ष पूर्व ऋषि दयानन्द भी आये। हजारों वर्ष पश्चात् वे ही एकमात्र ऐसे व्यक्ति थे, जिन्होंने मानवता एवं इस आर्यावर्त्त (भारत) राष्ट्र के पतन का ठीक-2 कारण जाना और वह कारण था, वेद विद्या को भूल जाना और वेद के नाम पर वा वेदविरोध के नाम पर अविद्या-पाखण्ड का प्रचलित हो

जाना। इस कारण उन्होंने पराधीन देश व खण्ड-2 होते समाज की भयंकर पीड़ा को समझते हुए भी वेदोद्धार को प्राथमिकता दी परन्तु साथ ही स्वराज्य व समाज सुधार के लिए भी उस समय में अद्भुत प्रेरणा दी। प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम के लक्ष्य तक न पहुंचने के पश्चात् स्वराज्य की बात जब किसी के मन में भी न थी, तब उन्होंने इसे अपने ग्रन्थों व भाषणों में प्रबलता से रखा। उन्हेंाने वेदभाष्य करते हुए यह घोषणा की थी, **'मेरे वेदभाष्य से सूर्य के समान प्रकाश हो जायेगा, जिसे मिटाने का सामर्थ्य किसी का भी न होगा...'।** उन्होंने एक अति महत्वपूर्ण दूरदृष्टिपूर्ण घोषणा अपने दूरद्रष्टा एवं दिव्यदृष्टा महान् गुरु स्वामी विरजानन्द सरस्वती की आज्ञा से की, कि आर्ष ग्रन्थों से ही भारत व मानव जाति का उद्धार हो सकता है। गुरुवर दण्डी जी तो अनार्ष ग्रन्थों के ऐसे कठोर आलोचक थे कि सम्भवतः उस समय विश्व में कोई दूसरा नहीं होगा। वे अनार्ष शिक्षा को मानवता व राष्ट्र का सबसे बड़ा शत्रु मानते थे। वास्तव में यह सत्य भी है कि **यदि महाभारत के पश्चात् वेद व आर्ष शिक्षा एवं उसका महान् विज्ञान तकनीक का विनाश नहीं होता, तो विश्व में कोई भी मिथ्या मत जन्म ही नहीं लेता और प्यारा भारत आज भी विश्व गुरु बना रहता तथा विश्व को सुख व शान्ति का मार्ग दिखा रहा होता।** यह बात उस काल में लंगोटी वाले प्रज्ञाचुक्ष फकीर ने समझी परन्तु हम सब आँखों वाले मिलकर भी इस सत्य को आज तक नहीं समझ पाये।

आएँ, आत्मनिरीक्षण करें

मेरे आर्य समाजी बन्धुओ! आज मैं आपको आत्म निरीक्षण का परामर्श दे रहा हूँ, आग्रह वा निवेदन कर रहा हूँ कि आज आर्य समाज का संगठन अथवा प्रत्येक आर्य समाजी ऋषि दयानन्द की इन दोनों घोषणाओं से कितना सहमत है? वेद व आर्ष ग्रन्थों की शिक्षा के प्रचार एवं अनार्ष-अवैदिक शिक्षा व परम्पराओं के तिरस्कार का कितना भाव उसके अन्दर है? आप और आपका परिवार क्या घोर अनार्ष मैकाले की शिक्षा व अंग्रेजी भाषा, वेशभूषा, संस्कारों के प्रवाह से दूर है? क्या आप वैदिक

आर्ष शिक्षा, संस्कृत, हिन्दी भाषा अथवा अन्य भारतीय भाषाओं, भारतीय वेशभूषा व संस्कारों को अपने परिवार में भी स्थापित कर पाये हैं? क्या वेद का सूर्य, जिसे ऋषि दयानन्द सम्पूर्ण विश्व में चमकाने की घोषणा कर गये, वह आपके परिवारों में भी चमक सका और क्या वैदिक-आर्ष संस्कृति को आपके परिवार में भी मान्यता आज तक मिल पायी है? इसकी परीक्षा के लिए मैं आपके समक्ष निम्नलिखित प्रश्न प्रस्तुत कर रहा हूँ, जिनका उत्तर आप अपने निज स्वरूप आत्मा में ही खोजें -

1. क्या आप वेद को वास्तव में ईश्वरीय तथा सब सत्य विद्याओं (विज्ञान) का ग्रन्थ मानते हैं?
2. क्या आपको वेदभाष्य पढ़ते समय वास्तव में यह प्रतीत हाता है कि ऐसा ग्रन्थ कोई ऋषि नहीं लिख सकता वा सकते?
3. क्या आपको लगता है कि इसमें जीवन की सभी समस्याओं का समाधान विद्यमान है? क्या ऋषियों के ग्रन्थों व वेदों के ज्ञान से ही सम्पूर्ण विश्व के सभी कार्य सिद्ध हो सकते हैं, किसी अन्य शिक्षा की देश व विश्व को कोई आवश्यकता नहीं है।

यदि आप इन तीनों प्रश्नों का उत्तर हां, में देते हैं, तब फिर स्वयं से ये प्रश्न पूछें -

1. आप पश्चिमी शिक्षा (विज्ञान, कृषि, गणित, भूगोल, व्यापार प्रबन्धन, अर्थशास्त्र, चिकित्सा, इंजीनियरिंग आदि) को क्यों पढ़ते हैं? क्यों अपने बच्चों व बच्चियों को वेद व आर्ष ग्रन्थों की शिक्षा से दूर करके मैकाले की शिक्षा वाले आधुनिक विद्यालयों में पढ़ाते हैं? क्यों विश्वविद्यालयों, उच्च स्तरीय शोधसंस्थान, IIT, IIM, AIMS, NIT आदि उच्च शिक्षण संस्थानों में पढ़ाते हैं और दूसरों, विशेषकर ग्रामीणों वा छोटे कार्यकर्त्ताओं के बच्चों को गुरुकुलों में पढ़ने को प्रेरित करते हैं? क्यों आर्य नेताओं, धनपतियों एवं विद्वानों के बच्चे गुरुकुलों में नहीं पढ़ते?
2. आज राजनेता अपनी सन्तान को नेता, अधिकारी अपनी सन्तान को अधिकारी,

उद्योगपति अपनी सन्तान को उद्योगपति, व्यापारी अपनी सन्तान को व्यापारी बनाना चाहते हैं, तब क्यों विद्वान् व उपदेशक अपनी सन्तान को विद्वान् व उपदेशक नहीं बनाना चाहते हैं? क्यों बड़े-बड़े आर्य नेता अपनी सन्तान को विद्वान् वा विदुषी नहीं बनाना चाहते हैं?

3. क्या आपके हृदय में संस्कृत वा आर्ष गुरुकुल के ब्रह्मचारी वा आचार्य के प्रति वह सम्मान है, जो आप आधुनिक अनार्ष उच्च शिक्षण संस्थानों के छात्रों व प्राध्यापकों अथवा राजनेता, प्रशासनिक अधिकारी आदि का करते हैं? वास्तव में आप किसे अधिक चाहते हैं?
4. क्या आपको एलोपैथी चिकित्सा की अपेक्षा आयुर्वेदिक पद्धत्ति पर विश्वास है?
5. क्या आपके मन में कभी यह खेद नहीं होता कि काश! आपके बच्चे वैदिक विद्वान् होते।

यदि आपका मन यह समझाने का प्रयास करे कि यदि सभी के बच्चे गुरुकुलों में पढ़ें, तो धन कौन कमाएगा? गुरुकुलों को दान कौन देगा? तब आप फिर स्वयं से यह प्रश्न करें कि वैदिक एवं आर्ष शिक्षा क्या इतनी दीन-हीन है कि जो हमें आजीविका भी प्रदान नहीं सकती, जो हमें डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक एवं अर्थशास्त्री आदि नहीं बना सकती, जो हमें कृषि, व्यापार और उद्योग नहीं सिखा सकती? यदि ऐसा है, तो फिर इस विद्या का क्या महत्व है?, जो विद्या हमें उदर-पोषण के लिए भी मैकाले की शिक्षा पद्धति की शरण में जाने के लिए बाध्य करती हो, उसे ईश्वरीय विद्या और धर्म कैसे कह सकते हैं? महाभारत में भीष्म पितामह ने धर्म का लक्षण बताते हुए लिखा है-

प्रभवार्थाय भूतानां धर्मप्रवचनं कृतम्।
यः स्यात् प्रभवसंयुक्तः स धर्म इति निश्चयः

अर्थात् धर्म वही है, जो लौकिक व पारलौकिक उन्नति का साधन हो सके। जिस विद्या का ऋषि दयानन्द और उनके गुरुवर विरोध करते रहे, हम उसी अनार्ष विद्या के सम्मुख क्यों नतमस्तक होने को विवश हैं? क्यों उनकी टैक्नोलॉजी एवं विज्ञान आदि का उपयोग करते हुए भी मैकाले की शिक्षा की निन्दा करते हैं? क्या हम ऋषि दयानन्द को मिथ्यावादी कहेंगे? क्या प्राचीन ऋषि व महर्षियों को वर्तमान वैज्ञानिकों एवं शिक्षाविदों की अपेक्षा हम मूर्ख समझते हैं? यदि नहीं, तो हम अपने बच्चों को आर्ष विद्या क्यों नहीं पढ़ाते? क्यों हम गुरुकुलों को भी आधुनिक अनार्ष शिक्षा के साँचे में ढालते जा रहे हैं? क्यों हम आर्ष गुरुकुलों के स्थान पर आधुनिक शैली के महंगे-2 विद्यालय खोलने का प्रयास कर रहे हैं। क्या हम ऋषि-मुनियों को मन से मूर्ख मान बैठे हैं? हम अपने मंचों पर, लेखों एवं पुस्तकों में क्यों गुरुकुलों, वेदों की वकालत करते हैं? आप अपने मन से यह भी प्रश्न करें कि गुरुकुलों के अध्यापकों एवं आचार्यों की अपेक्षा आधुनिक शैली के विश्वविद्यालयों एवं विद्यालयों के शिक्षकों को अधिक वेतन क्यों देते हैं? क्या यह सब अधर्म की श्रेणी में नहीं आता, जो हम अपनी कथनी और करनी में पूरी तरह से भेद रखते हैं।

स्वदेशी के भाव का पलायन

अब हम शिक्षा की चर्चा के पश्चात् कुछ अन्य चर्चाएं भी करते हैं - महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने समय में स्वदेशी का नारा दृढ़ता से दिया। वे भारतीय वेशभूषा और जीवन शैली के प्रबल पक्षधर थे। क्या हम ऋषि के इस मत को आज तक हृदय से स्वीकार कर सके हैं? इस विषय में भी आप स्वयं से प्रश्न करके देखें-

1. क्या आप भारतीय वेशभूषा धारण करते हैं? यदि हां, तो सम्भवत: आप वृद्ध ही होंगे। आपके पुत्र-पुत्री, पौत्र-पौत्री वा वधुएं भारतीय वेशभूषा को धारण करते हैं? यदि हाँ, तो निश्चित ही आप स्वदेशी के निकट हैं और यदि नहीं, तो निश्चित ही आप में स्वदेशी वेशभूषा के प्रति घृणा का भाव है। क्या आप अपनी सन्तान के इस विदेशी वेशभूषा के प्रति प्रेम व स्वदेशी के प्रति घृणा के भाव

को देखकर दुःख का भी अनुभव करते हैं? क्या आप उन्हें भारतीय वेशभूषा के प्रति प्रेम करने की शिक्षा भी देते हैं? यदि हाँ, तो आपकी सन्तान आपके विचारों का निरादर करके विदेशी विचारों का आदर क्यों करती है? और क्या आपने कभी इन कारणों को खोजने का प्रयास भी किया है? अथवा आप स्वयं भारतीय वेशभूषा किसी भूल अथवा विवशतावश ही धारण करते हैं। हां, यह बात स्पष्ट अवश्य कर दूं कि भारतीय वेशभूषा पहनने से कोई धर्मात्मा व देशभक्त तथा विदेशी वेशभूषा पहनने से कोई अधर्मी व देशद्रोही नहीं हो सकता परन्तु वेशभूषा किसी देश की परम्परा के प्रति प्रेम वा निरादर का भाव तो दर्शाती ही है।

2. क्या हम प्राचीन भारतीय वेशभूषाधारी किसी महिला अथवा पुरुष का सम्मान किसी विदेशी वेशभूषाधारी महिला अथवा पुरुष की अपेक्षा अधिक करते हैं? यदि नहीं, तो क्या यह विदेशी दासता का प्रतीक नहीं है? स्वयं से पूछने के लिए और भी अनेकों प्रश्न हो सकते हैं, जिन्हें छोड़ते हुए हम इस बात पर भी आत्मचिन्तन करें।
3. क्या आपके खान-पान, वार्तालाप (भाषा) एवं पर्व परम्पराओं आदि में वैदिकता एवं स्वदेशीपन का समावेश रहता है? अथवा हमारी भोजनशाला में भी अंग्रेज प्रविष्ट हो गया है? क्या हमारे शयनकक्ष व शौचालय तक भी अंग्रेजी दासता से बच पाये हैं?

क्या हमें ईश्वर का विश्वास है?

जो व्यक्ति आत्मा की आवाज के प्रतिकूल वर्तता है, वह अन्धकार भरी योनियों में जन्म लेता है -

असुर्या नाम ते लोका अन्धेन तमसावृताः।
ताँस्ते प्रेत्यापि गच्छन्ति ये के चात्महनो जनाः।।

(यजु. 40/3)

तब क्या उपर्युक्त बिन्दुओं पर हम आत्मा के अनुकूल वर्त रहे हैं? कोई-कोई यह

कहते हैं कि वेदादि शास्त्रों से हम भौतिक उन्नति तो नहीं कर सके वा सकते हैं, परन्तु आध्यात्मिक उन्नति तो कर सकते हैं व की है। वे प्रथम तो यह विचारें कि उन्हें आर्य समाज के तृतीय नियम पर विश्वास है वा नहीं? क्या आप व पौराणिक (कथित सनातनी) बन्धु व बहनों को भगवान् मनु, महर्षि गौतम, महर्षि व्यास, महर्षि कणाद व आद्य शंकाराचार्य के वेदों की सर्वज्ञानमयता के विषय में कहे वचनों पर विश्वास है? क्या परमात्मा भौतिक उन्नति व जीवन यापन के लिए ज्ञान नहीं देता? क्या इसके लिए मनुष्य को पशुओं की भाँति अपने हाल पर छोड़ देता है? यदि नहीं, तब वेद में दोनों ही विद्याओं का होना अनिवार्य है। यदि अध्यात्मिक की ही बात करें, तो स्वयं से पूछें–

1. क्या हम वास्तव में संध्योपासना आदि कर्म नित्य करते हैं? कहीं आप दूसरों को केवल मूर्तिपूजा से विमुख करके और संध्योपासना न सिखाकर नास्तिक तो नहीं बन रहे हैं?
2. क्या हमारा ध्यान स्थिर रह पाता है? फिर सबसे महत्वपूर्ण यह कि क्या हम अहिंसा, सत्य अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, शौच आदि यम-नियमों का पालन करना सीख गये हैं अथवा ये सब प्रवचन करने के ही विषय रह गये हैं? क्या हमें दृढ़ता से ईश्वर पर विश्वास है? यह पूछें, एकान्त में स्वयं से। क्या हमें उसका कोई भय रहा है? क्या हम प्रत्येक व्यवहार ईश्वर की साक्षी में करते हैं अथवा केवल अभिनय करते हैं?
3. घंटो-घंटों साधना करते हुए क्या हमने काम, लोभ, अहंकार व ईर्ष्या जैसे दुर्गुणों को जीत लिया है? यदि नहीं, तो घंटों ध्यान करने में समय नष्ट क्यों करना? जो ध्यान, जो शास्त्राध्ययन हमें इतना भी नहीं सिखा सके, तब उस ध्यान व शास्त्राध्ययन से तो कृषि आदि कर्म करें, तो अधिक उपकार होगा।
4. जो हम मंच पर प्रवचन करते हैं, पढ़ते व पढ़ाते हैं, उस पर क्या हृदय से स्वयं भी विश्वास करते हैं? यदि नहीं, तब क्या हमारे प्रवचन व अध्यापन केवल

अपनी आजीविका व लोकेषणा की पूर्ति के लिए तो नहीं हैं?

वेद के रक्षको, जागो!

अब मैं सभी वेदभक्तों, ऋषियों व देवों के अनुयायियों व भगवान् श्रीराम एवं भगवान् कृष्ण जैसे महामानवों के वंशजों की सेवा में कुछ निवेदन करना चाहता हूँ –

1. क्या आप वेद व ऋषियों में श्रद्धा रखते हैं, यदि हाँ, तो आप इन्हें कितना जानते वा जानने का प्रयास करते हैं?
2. क्या आप कभी यह भी विचारेंगे कि महर्षि दयानन्द व आर्य समाज ने वेद व ऋषियों के विरुद्ध ऐसा क्या कहा वा लिखा, कि आप उनको अपना विरोधी मानते हैं?
3. क्या आपको मूर्तिपूजा इतनी अधिक महत्वपूर्ण प्रतीत होती है कि उसके लिए आप योगाभ्यास, वेद, उपनिषद्, दर्शन एवं महापुरुषों के चरित्रों की पूजा आदि को त्याग बैठे हैं और केवल मूर्तिपूजा करके ही अपने धर्म व कर्त्तव्य की इतिश्री मान बैठे हैं?
4. हमारे आपके पूर्वज ऋषियों, देवों व अन्य महापुरुषों के चरित्र पर विधर्मी आक्षेप कर रहे हैं, उनका उत्तर देने का दायित्व क्या केवल आर्य समाजियों का है? क्या आप जिनकी मूर्तियों की पूजा करते हैं, उन देवों के चरित्र का हनन करने वालों को उत्तर देने का प्रयास नहीं करेंगे? यदि आपमें यह सामर्थ्य नहीं, तो क्या आपको इन महापुरुषों की पूजा भी करने का अधिकार है?
5. वेदादि शास्त्रों पर आज सोशल मीडिया के माध्यम से भारी प्रहार हो रहा है, उसका उत्तर देना क्या आर्य समाजी एवं पौराणिक (कथित सनातनी) दोनों का ही धर्म नहीं है? कितने वीर इस धर्म को निभाने वाले इस भारत भूमि पर हैं? कितने इन ग्रन्थों का अध्ययन व अनुसंधान कर रहे हैं? इनके बचे बिना क्या देश बच पाएगा? क्या प्रत्येक हिन्दू का कर्त्तव्य नहीं है कि राष्ट्रहित व वेदहित

में एकजुट हो जाए? प्रत्येक भारतीय मुस्लिम व ईसाई आदि का भी यह परम कर्त्तव्य होना चाहिए, क्योंकि वे भी इन्हीं महापुरुषों की सन्तान हैं। क्या मजहब परिवर्तन से वंश भी बदल सकता है? इस कारण सभी को मिलकर भारत को बचाना चाहिए क्योंकि राष्ट्र हम सबका है। जो आज स्वयं को हिन्दू से पृथक् मान रहे हैं, उन जैन, बौद्ध, सिख आदि के प्रवर्तक सभी आर्य पुरुष भारतीय ही थे, इस कारण वे तो वेद के निकट ही हैं।

बन्धुओ व बहिनो! आर्य समाजी बन्धुओं के समक्ष जो प्रश्न हैं, वे पौराणिक (कथित सनातनी) बन्धुओं के लिए भी उतने ही चिन्तनीय हैं। आप सभी यह जानना चाहेंगे कि प्रश्न उठाए परन्तु समाधान नहीं दिया। पाश्चात्य शिक्षा व कुसंस्कार की आंधी के वेग में सबके बहने का रोना तो रोया और सबको अन्दर से झकझोर भी दिया, परन्तु उस आंधी से बचने का उपाय नहीं बताया। विधर्मियों के आक्रमण का भय तो दिखाया परन्तु भयाक्रान्त भारत को सान्त्वना के दो शब्द तक नहीं कहे। मैं जानता हूँ कि आपका यह सोचना सर्वथा उचित है, इस कारण मैं अब इन सभी समस्याओं के समाधान का एक मूल आधार प्रस्तुत करने वा मूल मंत्र देना चाहता हूँ, तो सुनें –

मेरा स्पष्ट अनुभव है कि आज वेदभक्त व ईश्वरभक्त कहाने वालों का वेद तथा ईश्वर पर विश्वास रहा ही नहीं है, अन्यथा हम सभी के आचरण ईश्वर व वेद के प्रकाश से प्रकाशित अवश्य होते। पारस्परिक राग, द्वेष, ईर्ष्या, अहंकार, काम व क्रोधादि के जाल में नहीं फंसे होते। अपने बच्चों को वैदिक आर्ष शिक्षा दिलाने में गर्व अनुभव कर रहे होते। आज कौन ऐसा वीर है, जो यह सब करने का साहस करता है? आज कौन विद्वान् व आर्यनेता अपने बच्चों को विद्वान् बनाना चाहता है? कौन आज वेद व आर्ष ग्रन्थों पर हो रहे बौद्धिक आक्रमणों का उत्तर देने के लिए पर्याप्त पाण्डित्य रखता है, यदि कोई रखता है, तो क्यों वह ऐसा नहीं करता? मैंने भी सार्वदेशिक सभा के माध्यम से 11 गम्भीर प्रश्न शीर्ष विद्वानों को भिजवाये

थे, लगभग पौने दो वर्ष हो गये, कोई उत्तर नहीं दे रहा और न कोई यह कह रहा कि उसके पास इनका समाधान नहीं है? सोचो, यदि दयानन्द होते, तो क्या यूं ही चुप बैठे रहते? इस कारण मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं कि आर्य समाज ने राष्ट्र व समाज के हित में बहुत कार्य किए, तप, त्याग व बलिदान का हमारा स्वर्णिम इतिहास भी रहा परन्तु वेद व ब्राह्मण ग्रन्थों का यथार्थ विज्ञान आज तक नहीं समझा गया।

मैकाले की दासता का दंश

पाश्चात्य शिक्षा को चुनौती देने के लिए स्थापित किया गया गुरुकुल कांगड़ी स्वयं पाश्चात्य शैली में ढलने को विवश हुआ, इससे अधिक क्या प्रमाण हो सकता है, वेद को वर्तमान शिक्षा के समक्ष बौना सिद्ध करने के लिए। **आर्य समाजों में चल रहे विद्यालय, रा.स्व.से. संघ की विद्या भारती द्वारा संचालित विद्यालय वा महाविद्यालय, आधुनिक अंग्रेजी शिक्षा के ढांचे में ढले अनेक नामधारी गुरुकुल एवं डी.ए.वी. विद्यालय क्या पाश्चात्य मैकाले की वन्दना नहीं कर रहे हैं?** इसलिए मैं कह रहा हूँ कि हमें ईश्वर व वेद पर विश्वास रहा ही नहीं है। ईश्वर पर विश्वास इस कारण नहीं रहा, क्योंकि ईश्वर के कार्यों अर्थात् सृष्टि को हमने जाना ही नहीं। वेद ने कह दिया–

विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे।

अर्थात् परमात्मा की सृष्टि में उसके कर्मों को देखकर अपने कर्मों का सुधार अर्थात् आचरण करना सीखो परन्तु हमने ईश्वर के कर्म सीखे ही नहीं, सृष्टि के पदार्थों में उसका अस्तित्व दिखाई ही नहीं देता, तब कैसे वेद पर विश्वास होगा और कैसे ईश्वर को साक्षी में सत्कर्म करने की प्रेरणा मिलेगी?

मैं स्पष्ट कहना चाहता हूँ कि जो व्यक्ति सृष्टि को नहीं जानता, वह ईश्वर

पर कभी पूर्ण एवं सत्य विश्वास नहीं कर सकता। उसके अभाव में उसकी साधना, पूजा, प्रवचन सब ढोंग हैं और ऐसा व्यक्ति दुर्गुणों से कभी बच नहीं सकता। हम क्यों इस कटु व लज्जाजनक सत्य को स्वीकार करने से डरते हैं कि पाश्चात्य शिक्षा के बिना हमारा जीवन नहीं चल सकता। यदि इसे स्वीकारें, तो दूसरों से कैसे कहें कि बच्चों को आर्ष शिक्षा के लिए गुरुकुलों में भेजें? तब, ये आचार्य व ब्रह्मचारी क्या करेंगे? पौराणिक (कथित सनातनी) वेदपाठियों को तैयाार करके क्या करेंगे? उनकी दक्षिणा पर भी ग्रहण लगने वाला है। पुजारियों का भविष्य भी धीरे-2 अंधकार का ओर जा रहा है। **पाश्चात्य शिक्षा व उसी के कुसंस्कारों की सुनामी आर्य समाज, पौराणिक (कथित सनातनी) ही नहीं, अपितु सिख, जैन, बौद्ध, इस्लाम व ईसाई सबको बहा ले जायेगी और संसार में केवल नास्तिकता का ही साम्राज्य आने वाला है।** हम ऊपर से भले ही आस्तिकता का दिखावा करें, अन्दर से नास्तिक बनते जा रहे हैं। जरा विचारें कि क्या ईश्वर केवल आपको संध्या, उपासना वा पूजा करते समय ही याद नहीं आता? क्या व्यापार करते समय, कार्यालय के कार्य करते समय एवं अन्य संसारिक व्यवहार करते समय कभी ईश्वर का अनुभव होता है, जिससे डर कर आप झूंठ, छल-कपट, धोखा, ईर्ष्या, द्वेष, अति कामुकता, क्रोध व अहंकार आदि से बच जाते हैं? सत्य बोलें, क्योंकि हम सभी का आत्मा सत्य को अवश्य जानता है, अपने दुर्गुणों को अवश्य जानता है। आप सोचेंगे कि अभी भी समस्याएं बता रहे हैं, उनका मूल कारण व निवारण पर कोई चर्चा नहीं कर रहे। इसलिए मैं अब इसके मूल कारण व उसके निवारण पर चर्चा करता हूँ -

क्या वेद का स्वरूप जानेंगे?

मेरा मानना है कि हम तथ्य को भूल गए कि **वेद यदि ईश्वरीय ज्ञान है, तो उसमें सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का ऐसा विज्ञान होगा, जो मनुष्य द्वारा खोजे गए किसी भी विज्ञान की अपेक्षा इतना गम्भीर होगा कि मनुष्यकृत विज्ञान उसकी समता कभी नहीं कर पाएगा और वह विज्ञान केवल आर्य समाजियों, हिन्दुओं अथवा**

इस पृथ्वीवासियों के लिए ही सीमित नहीं होगा, अपितु ब्रह्माण्ड में जहाँ-2 भी मननशील प्राणी रहते हैं, उन सबके लिए उन सभी परिस्थितियों को दृष्टिगत रखते हुए समान रूप से हितकारी होगा। इस कारण वेदभाष्यों और इनके व्याख्यानरूप ब्राह्मण ग्रन्थों के भाष्य इस अनिवार्य तथ्य को ध्यान में रखकर ही होने चाहिए, जो आज नहीं है। ऋषि दयानन्द सरस्वती के भाष्य अति संक्षिप्त और सांकेतिक ही हैं, उनमें भी संस्कृत भाष्य ही उनके हैं, हिन्दी वाले नहीं। कुछ व्यक्ति हठपूर्वक अथवा भोले-भाले आर्य समाजियों को यह दिखाने के लिए कि वे ही सच्चे ऋषि भक्त हैं, ऋषिकृत वेदभाष्य को ही पूर्ण एवं पर्याप्त मानते हैं परन्तु उनका आत्मा ऐसा स्वीकार नहीं करता है। इस कारण वे अपने पुत्र-पुत्रियों को पाश्चात्य शिक्षा ही पढ़ाते हैं। **वेद की बात केवल मंच की शोभा है, वह परिवार के लिए थोड़े ही है।** यह तो पौराणिकों का हनुमान् चालीसा हुआ, जो मन्दिर में हनुमान् चालीसा गा-गाकर सूर्य को हनुमान् से निगलवाता है और विद्यालय अथवा घर में जाकर बच्चों को विज्ञान पढ़ाता हुआ सूर्य को पृथ्वी से 13 लाख गुना बड़ा बताता है। यह आत्महनन का घोर पाप है, जो आज निःसंकोच हो रहा है। इसलिए मेरा सभी से अनुरोध है कि आप वेद को अब तक नहीं समझ पाए अथवा किसी विद्वान् ने नहीं समझा, तो हम नए सिरे से जीना और वेद को समझना सीखें।

मैंने सम्पूर्ण परिस्थिति को 20-25 वर्ष पूर्व ही भांप लिया था, तभी से वेद के यथार्थ वैज्ञानिक स्वरूप को समझने की तीव्र इच्छा थी। मेरा स्वभाव रहा है कि जिस तथ्य को मेरी बुद्धि स्वीकार न करे, उसे मैं दूसरों के सामने प्रस्तुत न करूँ। इस कारण आर्य समाज के तृतीय तथा प्रथम नियम को स्वीकार कर पाना ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों के कुछ आश्वासन के अतिरिक्त किसी भी प्रकार का अन्य आर्य साहित्य मुझे सन्तुष्ट नहीं कर पा रहा था। ईश्वर कृपा से मैंने इसको सिद्ध करने का **भीष्म संकल्प लिया और आप सबके सहयोग से एवं ईश्वर कृपा से इसे पूर्ण भी कर लिया। आज ईश्वर की वैज्ञानिक सिद्धि उसको प्रत्येक क्षण कण-कण**

में अनुभूत करना, उसकी कार्यविधि को व्यापक एवं सूक्ष्म दृष्टि से समझना और किसी भी वैज्ञानिक बुद्धि वाले को समझाना, वेद की ईश्वरीयता और सर्वविज्ञानमयता को सिद्ध करना मेरी 'वैदिक रश्मि थ्योरी' के लिए अब साधारण बात है।

इस प्रकार आर्य समाज के प्रथम और तृतीय नियमों में मेरा स्थायी एवं सुदृढ़ विश्वास हुआ है। यदि मैं '**वेदविज्ञान-आलोकः**' जैसा ग्रन्थ नहीं रच पाता, तो ऐसा करना मेरे लिए सम्भव नहीं हो पाता और मैं भी क्या होता, यह भी नहीं कह सकता। यद्यपि '**वेदविज्ञान-आलोकः**' में मैंने 95 वैदिक, आर्ष एवं अन्य संस्कृत ग्रन्थों के साथ-साथ वर्तमान भौतिकी के उच्च स्तरीय 29 ग्रन्थों वा शोधपत्रों को उद्धृत किया है परन्तु वैदिक और आर्ष ग्रन्थों को समझने की दिशा ऋषि दयानन्द के वेद भाष्य से ही मिली है, जिसे मैंने सहस्त्रों स्थानों पर उद्धृत किया है। '**वेदविज्ञान-आलोकः**' एक ऐसा वैज्ञानिक ग्रन्थ है, जिसके समक्ष संसार का कोई भी वेद विरोधी वैज्ञानिक अपनी शेखी नहीं बघार सकता और न वेद की निन्दा करने का साहस कर सकता। यह ग्रन्थ आधुनिक भौतिक विज्ञान को सर्वथा नई दिशा देने में समर्थ है और सृष्टि की सर्वथा नई वैदिक वैज्ञानिक (वस्तुतः पुरातन व सनातन) व्याख्या करता है। यह वर्तमान सैद्धान्तिक भौतिकी की अनेकों गम्भीर और उन अनसुलझी समस्याओं का समाधान करने में सक्षम है, जिन्हें सुलझाने में विश्व की बड़ी से बड़ी वैज्ञानिक संस्थाएं अरबों-खरबों डॉलर खर्च करने के पश्चात् और पिछले एक शताब्दी का समय खर्च करने के पश्चात् भी असफल रही हैं। इस समय विश्व के सैद्धान्तिक भौतिक विज्ञान को एक ऐसी ऊँची और सुदृढ़ दीवार दिखाई देती है, जिसने उनके नवीन आविष्कारों का मार्ग ही बन्द कर रखा है।

दुःखदायिनी अदूरदर्शिता वा आत्ममुग्धता

ऐसी स्थिति में 'वेदविज्ञान-आलोकः' उस बाधक विशाल दीवार को तोड़कर विज्ञान को आविष्कार के नए-नए क्षेत्र सुझाने में समर्थ है और उनको पूरा मार्गदर्शन

देने में भी समर्थ है, परन्तु कार्य उनको ही करना है, क्योंकि उनके साथ ही विश्व की सभी राजसत्ताएं, अर्थसत्ताएं, संचारतन्त्र एवं मानव समाज है और मेरे साथ मुट्ठी भर आर्यजन और कुछ युवा वैज्ञानिक ऐसी सोच वाले युवा तथा कुछ पौराणिक वेदभक्त। मुझे खेद है कि बौद्धिक दासता के चलते न तो वह भारत सरकार, जिसे हम अपनी राष्ट्रभक्त व वैदिक संस्कृति की पोषक समझते थे और उसके अधिकारी हमारे कार्य को अभी तक समझ पाए, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ अपनी अज्ञानता व ईर्ष्यावश न समझ पाया और न समझ पाएगा। उसकी यह अज्ञानता एक दिन राष्ट्र के विनाश का कारण बनेगी परन्तु आज तो वह सत्ता के अहंकार में मस्त है। **हिन्दू समाज का कोई स्तर ही नहीं रहा, यह तो फुसफुसिया जीव है, जिसे अपना हित-अहित का कुछ भी बोध नहीं और फिर आज हिन्दू है कौन? यहाँ तो परस्पर एक दूसरे को नीचा दिखाने में तत्पर हजारों कथित जातियां भरी हैं, जो कूंए के मेंढ़क की भाँति थोड़ी दूर का भी नहीं देख पा रहीं।** तब इन्हें यह बोध तो कैसे होगा कि वे वास्तव में आर्यों के वंशज हैं। वैसे इनको दोष कैसे दूं? जबकि मेरा सर्वाधिक निकटवर्ती परिवार अर्थात् आर्य समाज का संगठन, मेरे अपने साथी अर्थात् आर्य विद्वान्, भाषणों, जय-जयकारों और बड़े-2 मंचों पर माला की शान और तालियों की गड़गडाहट में स्वयं के अस्तित्व को समाप्त करती हुई आर्य सभाएं मेरे इस कार्य को आज तक नहीं समझ सकी हैं? आर्य समाज को मैंने अपना सर्वाधिक निकटवर्ती इसी कारण कहा है कि यह अभी भी वेद का नाम अधिक लेता है, अन्यथा मैं तो सम्पूर्ण मानव जाति को ही एक परिवार मानता हूँ और किसी भी वेदभक्त व ईश्वरभकत को ऐसा ही मानना चाहिए, अन्यथा उसको वेद व ईश्वर का कोई ज्ञान नहीं है।

आशा अभी शेष है

इतने पर भी मैं सभी आर्यों और सनातनी कहलाने वाले सज्जनों और देवियों से कहना चाहूँगा कि आशा के दीप सर्वथा बुझे नहीं है। यह '**वेदविज्ञान-आलोकः**' ग्रन्थ 12,000/- मूल्य का होते हुए भी 14 देशों में पढ़ा जा रहा है। हमारा यू-ट्यूब

चैनल **Vaidic Physics** संसार के 46 देशों में देखा जा रहा है। इनमें देखने वालों में भारत, नेपाल के बाद अमेरिका तीसरे स्थान पर है। इस समय यू–ट्यूब पर पुरुष 87% तथा महिला 13% दर्शक हैं। दर्शकों में युवाओं की संख्या सर्वाधिक है। लाखों युवा, किशोर व प्रौढ़ देख रहे हैं।

आप में से कुछ सोच सकते हैं कि सोशल मीडिया पर तो इससे भी अधिक प्रचार अनेक अन्य लोग भी कर रहे हैं, तब यह क्या उपलब्धि है? इसके उत्तर में मैं कहूँगा कि हमारे वीडियोज् क्या आपने कभी देखे हैं? यदि नहीं, तो देखें फिर अनुभव होगा कि ऐसे कठिन व लम्बे वीडियोज् को कितना देखा जा सकता है? हमारे दर्शक उच्च प्राथमिक कक्षा से लेकर Ph.D. एवं Post Doc. तक के छात्र, वैज्ञानिक एवं प्रोफेसर, इंजिनियर्स और डॉक्टर्स हैं। इनमें ग्रामीण विद्यालय से लेकर विश्व के शीर्ष विश्वविद्यालयों तक के विज्ञान के छात्र व प्रोफेसर हैं। विश्व के सबसे बड़े वैज्ञानिक संस्थान नासा (NASA) एवं विश्व की सबसे बड़ी वैज्ञानिक प्रयोगशाला सर्न (NASA) में भी हमारे दर्शक हैं। विश्व के अनेक शीर्ष वैज्ञानिकों, जिसमें नोबल पुरस्कार विजेता भी सम्मिलित हैं, से हमने आधुनिक भौतिकी पर गम्भीर प्रश्न पूछ कर और उनमें से कुछ के संदेश पाकर आधुनिक भौतिकी कितने गहरे पानी में है, यह भी अच्छी प्रकार समझ लिया है और हमने यह भी जता दिया है कि इन सबका समाधान वैदिक भौतिकी द्वारा ही सम्भव है। परन्तु इस सच्चाई को गले उतारने से आधुनिक भौतिकी का महल हिल जायेगा और अनेकों के आर्थिक स्रोतों पर भी कुछ चोट हो सकती है, इस भय से सभी मौन प्रतीत होते हैं। हमें लगता है कि यही स्थिति वैदिक विद्वानों को भी प्रतीत होती है। इस कारण भी वे मौन हैं या विरोध में हैं। हां, यह सन्तोष की बात है कि **विज्ञान के अनेक मेधावी छात्रों एवं युवा वैज्ञानिकों ने इस सच्चाई को समझा है और कुछ निरन्तर समझ रहे हैं। ये हमारे साथ जुड़कर भविष्य में बहुत कार्य करेंगे, ऐसी हमें आशा है। अनेक युवा यहाँ आकर पढ़ना भी चाहते हैं परन्तु अभी हमारे पास न तो उतने संसाधन है और न**

अभी समय ही।

बन्धुओ और भगिनियो! मैं आपको अवगत कराना चाहता हूँ कि इस समय मैं निरुक्त का भाष्य (वैज्ञानिक भाष्य) कर रहा हूँ। मेरे पास इस समय निरुक्त के सात भाष्य उपलब्ध हैं, जिनमें से कुछ प्राचीन भाष्य हैं एवं कुछ वर्तमान समय के। सबको देखकर मैं आश्चर्यचकित हूँ कि जिस निरुक्त की प्रामाणिकता और प्रशंसा मैं आर्य विद्वानों से सुनता रहा एवं इस ग्रन्थ की वेदभाष्य में अनिवार्य महत्ता को भी सुनता रहा। जब मैंने इसके भाष्यों को देखा तो विचार करने लगा कि इन भाष्यों को गुरुकुलों के आचार्य एवं आचार्या कैसे ब्रह्मचारी एवं ब्रह्मचारिणियों को पढ़ाते हैं, कैसे कोई माता-पिता अपने सन्तान को पढ़ा सकते हैं? कैसे कोई परिवार में मिलकर इसे पढ़ सकते हैं? भाषा की अश्लीलता और फूहड़पन मुझ जैसे को वेदविरोधी बना सकता था परन्तु ईश्वर कृपा से मैंने निरुक्त में उद्धृत वेदमन्त्रों और निरुक्त में महर्षि यास्क के उन पर किये गये भाष्यों तथा निर्वचनों के आश्चर्यजनक विज्ञान को समझा, जिससे मेरे लिए निरुक्त के सभी भाष्यों की प्रासंगिकता समाप्त हो गई और **मैं सफलतापूर्वक निरुक्त के तीन अध्यायों का भाष्य कर चुका हूँ और सभी भाष्यकारों की परोसी गई गन्दगी के स्थान पर उच्च कोटि के वैज्ञानिक रहस्यों का उद्घाटन कर चुका हूँ।**

मैं आपको दृढ़ता से यह कहना चाहूँगा कि निरुक्त के अब तक किए गये भाष्य यदि विधर्मियों और वामपंथियों के हाथ लगे, तो वे वेद तथा ऋषियों पर ऐसे आक्रमण कर सकते हैं, जिनका सामना करने का सामर्थ्य न किसी आर्य विद्वान् में है और न किसी पौराणिक (कथित सनातनी) विद्वान् में, तब ऐसी स्थिति में उनके मन्दिर और उनमें बजने वाले घंटे, घड़ियाल भजन-कीर्तन, कथाएं इस अभागे हिन्दू समाज को कदापि नहीं बचा पायेंगे? और आर्य समाज के मंचों पर गरजते विद्वान्, साधना सिखाते आचार्य अथवा सोशल मीडिया पर आर्य नेताओं के लच्छेदार गर्वीले भाषण ही इस आर्य समाज एवं हिन्दू समाज को नहीं बचा पायेंगे? और हम वेद व

ऋषियों का घोर अपमान चुपचाप सह कर कबूतर की भाँति आँख बन्द करके जीते रहेंगे, तब उस जीने से तो मरण अच्छा है। इसके साथ ही आपकी भावी पीढ़ी न तो आर्य समाजी रहेगी और न हिन्दू, बल्कि वे यदि ईसाई, मुस्लिम न बने, तो वेदविरोधी वामपंथी अवश्य बन जायेगी, तब क्या आपके आत्मा को शान्ति मिलेगी?

इधर मैं आपको विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि 'वेदविज्ञान-आलोकः' और मेरे निरुक्त भाष्य को पढ़कर प्रतिभाशाली विद्वान् अथवा वैज्ञानिक बुद्धि वाला युवा संसार के किसी भी वेदविरोधी के हर आक्रमण का उत्तर देने में न केवल सक्षम होगा, अपितु यदि वह वेदविरोधी हठी और दुराग्रही न हुआ, तो उसे वैदिकधर्मी भी बना सकेगा। वर्तमान विज्ञान को एक नया प्रकाश मिलेगा और मिथ्या मत-मतान्तरों में फंसे लोगों को सन्मार्ग पर लाकर विश्व में एकमात्र वैदिक सत्य सनातन धर्म को मानव धर्म के रूप में प्रतिष्ठित करके समस्त मनुष्य जाति को एकता के सूत्र में बांधना सम्भव होगा। आज अपने देश और विश्व में जो भी साम्प्रदायिक एवं सामाजिक समस्याएं हैं, जो समूची मानव जाति के सुख-शान्ति के मार्ग में बाधक बनी हुई हैं, उन सबका कारण वेदादि शास्त्रों को भूलना अथवा उनके मिथ्या अर्थों का ग्रहण करना ही है। इसलिए हमारे वैज्ञानिक कार्य के द्वारा इन समस्याओं का दूरगामी एवं स्थायी समाधान किया जा सकेगा। वैदिक विज्ञान के आधार पर आविष्कृत तकनीक भविष्य में एक ऐसे युग का सूत्रपात कर सकेगी, जो प्राणिमात्र के लिए निरापद होगी। पर्यावरण के संकट धीरे-2 कम होते हुए समाप्त हो सकेंगे।

इसके आधार पर हमारे देश में हमारा अपना विज्ञान होगा, जो वेदादि शास्त्रों पर आधारित होगा, अपनी भाषा में होगा (संस्कृत-हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाएं), हमारी अपनी शिक्षा होगी और इसके पश्चात् हम भारतीयों को अन्य आर्ष ग्रन्थों पर श्रद्धा होगी। भारतीय स्वर्णिम इतिहास एवं सांस्कृतिक आदर्शों तथा मूल्यों पर गर्व होगा। अनुसंधान के अनेक क्षेत्र विकसित हो सकेंगे। यज्ञ व योग में रुचि उत्पन्न होगी, बौद्धिक दासता से हम मुक्त हो सकेंगे

और हमारा राष्ट्रीय स्वाभिमान जाग सकेगा। विश्व में वेद को प्रतिष्ठित करके हमारा भारत विश्वगुरु भी बन सकेगा। वैदिक कृषि-चिकित्सा एवं अर्थशास्त्र इस भारत को विश्व में एक नई ऊँचाई प्रदान कर सकेंगे। हाँ, मैं यह भी स्पष्ट करूं कि यह सब जादू की छड़ी की भाँति सहसा नहीं होगा, बल्कि जिस प्रकार मैकाले की पद्धति ने धीरे-धीरे हमें (सारे संसार को) बदला है, उसी प्रकार हमारा कार्य भी धीरे-धीरे 100-150 वर्ष में सम्पूर्ण विश्व का कायाकल्प कर सकता है, वह भी तब, जब हमें भी सबका पूर्ण सहयोग मिले। कुछ महानुभाव 100-150 वर्ष का नाम सुनकर ही घबरा जायेंगे, उन्हें मैं यही निवेदन करूंगा कि देश व समाज को किसी भ्रम में नहीं रहना चाहिए कि सब कुछ शीघ्र हो जायेगा। लुप्त विज्ञान को खोज कर वर्तमान विज्ञान के स्थान पर उसे स्थापित करना सहज नहीं होता। इस कारण हमें चीनी, अंग्रेजों व यहूदियों से दूरगामी योजना बनाने की सीख लेनी चाहिए। सत्य से मुख फेरना बुद्धिमानी नहीं है।

इस प्रकार हमारे वैदिक विज्ञान के कार्य से अनेकों संभावनाएं दिखाई देती हैं परन्तु यह सब हमारे 'वेदविज्ञान-आलोक:' अथवा निरुक्त के भाष्य को अलमारी में बन्द करने से नहीं होगा और न इन पर सामान्य चर्चा करने से ही होगा, बल्कि देशभक्त एवं वेदभक्त युवा वैज्ञानिक तथा वैज्ञानिक पृष्ठभूमि वाले युवा, विद्वान्, ब्रह्मचारी व आचार्य मिलकर इन ग्रन्थों का गम्भीरता से अध्ययन करेंगे, इसी शैली से अन्य आर्ष ग्रन्थों व वेदों की व्याख्या होगी, टैक्नोलॉजी के विशेषज्ञ एवं गणित शास्त्र के ज्ञाता हमारे वैदिक विज्ञान के आधार पर वैदिक टैक्नोलॉजी एवं गणित का विकास करेंगे। इन सबको मैं केवल सैद्धान्तिक आधारभूत मार्गदर्शन ही दे सकूंगा। इधर अभी प्रिय विशाल आर्य द्वारा वैदिक भौतिकी पर तैयार की जा रही एक पुस्तक, जो 'वेदविज्ञान-आलोक:' का सार रूप है, ग्यारहवीं से लेकर M.Sc. के छात्रों व छात्राओं में अधिकाधिक क्षेत्रों में देशभर में पहुंचाई जाएं और सोशल मीडिया द्वारा और भी व्यापक रूप से प्रचार किया जाए, तो आश्चर्यजनक क्रान्ति सम्पूर्ण देश में

हो सकती है। इसके साथ ही हर जागरूक व्यक्ति, विशेषकर हमारे अभियान से जुड़े वैज्ञानिक एवं युवा छात्र-छात्राएं अपनी-2 ओर से अपने-2 ढंग से प्रधानमन्त्री महोदय तक इसकी जानकारी देकर इस सम्पूर्ण विद्या को सम्पूर्ण संरक्षण देने का निवेदन करें।

उठो! वेद को बचाने के लिए

यदि सरकार की समझ में यह बात नहीं आए, तो अपने राष्ट्र, वेद तथा ऋषि-मुनियों व देवों के प्रति श्रद्धा रखने वाले छोटे व बड़े दानी महानुभाव ऐसे स्थायी फण्ड का निर्माण करें, जिससे न केवल **विशाल वैदिक वैज्ञानिक संस्थान का आधारभूत ढांचा विकसित किया जा सके, अपितु उसमें कार्य करने वाले युवा वैज्ञानिकों, तकनीकी विशेषज्ञों, संस्कृत व्याकरणादि के विद्वानों एवं अन्य प्रकार से कार्य कर रहे सभी कार्मिकों को राजकीय नियमानुसार आर्थिक संरक्षण देकर, सुनिश्चित, सुखमय एवं सम्मानित भविष्य दिया जा सके, जिससे वे पूरी निष्ठा के साथ निश्चिन्तता से कार्य कर सकें।** आज जो धार्मिक संस्थानों में हर विद्वान्, पुरोहित एवं कर्मचारी से तप और त्याग अपेक्षा की जाती है, उनके साथ कभी-2 श्रमिक जैसा व्यवहार किया जाता है, यह शास्त्र की दृष्टि से उचित नहीं है, बल्कि पाप है। हम पाश्चात्य शिक्षा देने वाले अध्यापकों को अधिक सम्मानित जीवन देने का प्रयास करते हैं। अपने बच्चों को आर्थिक सम्पन्नता में देखना चाहते हैं, तब वेद का काम करने वालों से क्यों तपस्या की अपेक्षा करते हैं? क्या इससे यही सिद्ध नहीं होता कि हम मैकाले की शिक्षा और उसके शिक्षकों को आर्ष विद्या तथा उसके आचार्यों और ब्रह्मचारियों की अपेक्षा अधिक सम्मान देते हैं, तब दूसरा कौन आर्ष विद्या को सम्मान देगा?

हमारे समाज में बड़े-बड़े आर्य नेता और आर्य श्रेष्ठी करोड़ों ही नहीं, अरबों तक की योजनाएं बना रहे हैं। विशाल एवं सभी सुख सुविधाओं से युक्त ऐसे केन्द्रों का निर्माण कर रहे हैं, जो केन्द्र वेदों पर हो रहे किसी भी आक्रमण का उत्तर देने की

न इच्छा रखते और न योग्यता। पौराणिक बन्धु करोड़ों अरबों खर्च करके बड़े-2 मन्दिर बना रहे हैं और बने हुए विशाल मन्दिरों में सोने के भण्डार भी भरे हुए हैं और भर रहे हैं, परन्तु **हम सबके जीवन रूप वेदादि शास्त्रों की रक्षा के लिए कोई भी नीति या योजना किसी के पास नहीं है। उन्हें अपने जयघोषों, नारों और आदर्शों को साकार करने अथवा बचाने की कोई भी चिन्ता नहीं हैं।** हम सभी अपनी नादानी, प्रमाद व अयोग्यता के कारण पग-पग पर धर्म को नष्ट कर रहे हैं अथवा विधर्मियों द्वारा नष्ट होते चुप-चाप देख रहे हैं। जरा विचारें कि यदि कोई आपकी सम्पत्ति लूटे, तब क्या आप यूं ही चुपचाप बैठे रहेंगे? यदि नहीं, तो परमात्मा तथा ऋषियों की अपार सम्पदा वेदादि शास्त्रों को लुटेरे नष्ट कर रहे हैं और आप मौन हैं, क्या यह घोर अधर्म नहीं है? फिर धर्म का आडम्बर क्यों? तब ध्यान रखें कि निश्चित ही नष्ट हुआ धर्म हमें ही नष्ट कर देगा। क्योंकि महर्षि व्यास जी महाराज का यह कथन -

''धर्म एव हतो हन्ति, धर्मो रक्षति रक्षितः''

कभी मिथ्या नहीं हो सकता। आज वेद पर आपकी चुप्पी इस देश को सर्वनाश की ओर ले जायेगी, आपकी पीढ़ी को वेद की शत्रु बना देगी। क्या आप नहीं जानते कि वेद से पूर्णतः परिचित न होने के कारण गौतम बुद्ध के वेद के विषय में मौन ने संसार में बौद्ध मत को जन्म दिया, जो कालान्तर में वेद का विनाशक सिद्ध हुआ और आज तो यह और भी नये रूप में भारत व वेद को नष्ट करने में प्रयत्नशील है,

इसलिए **कृपया वेद के विषय में मौन तोड़ो, यह अपराध है, वैदिक विज्ञान की उपेक्षा विनाशकारिणी होगी। आपके मौन से यह वैदिक धर्म एवं भारत निकट भविष्य में अन्धकार में डूब जायेगा, तब न तो पौराणिक मठ-मन्दिर बचेंगे और न आर्य संस्थाएं। इसके साथ ही आपके धन व संसाधनों पर भी भारी संकट आ खड़ा होगा। आप पहले भी लुटे हैं, फिर लुट जायेंगे।**

इसलिए नींद से जागो। मुझे आश्चर्य है कि हमारा संस्थान वेद, राष्ट्र तथा मानवता को बचाने का ऐसा कार्य, जिसकी कल्पना ऋषि दयानन्द जी ने की थी तथा जो विश्व में अपने ढंग का एक ही है, उसकी ओर बड़े-बड़े योजनाकारों का कोई ध्यान नहीं है। इसलिए मैं आप सभी से आग्रह करता हूँ कि इस लेख को एकाग्रचित्त होकर पढ़ें, आत्म निरीक्षण करें। वेद तथा राष्ट्र के हित में हो रहे सभी कार्यों की हमारी कार्य से तुलना करके देखें, फिर यदि आपका आत्मा स्वीकार करे कि वेदविज्ञान का यह कार्य आर्य समाज, हिन्दू समाज, भारत एवं सम्पूर्ण विश्व के लिए सर्वाधिक आवश्यक और महत्वपूर्ण है, तो सर्वात्मना सहयोग करें।

ध्यान रखें कि वेदविरोधी एवं राष्ट्रविरोधी कार्यों में लगे युवकों पर विधर्मी लोग पानी की तरह धन बहा रहे हैं। उनको धन सरकार नहीं देती, बल्कि कुछ राष्ट्रविरोधी, वेदविरोधी वामपंथी उद्योगपति और वे लोग, जिन्हें देशविरोध और वेदविरोध की घूंटी पिला रखी है, दे रहे हैं। इधर देखें, तो हम प्रतीक्षा ही कर रहे हैं कि कब सरकार सहायता दे और हमारा संस्थान आगे बढ़े। यह दयनीय स्थिति हम देशभक्त व वेदभक्त कहलाने वालों की है। क्या हम ही इतने गिरे हुए हैं कि विधर्मियों की तरह त्याग नहीं कर सकते। विधर्मी आतंकवादी तो अपने दुष्ट लक्ष्य के लिए अपने प्राणों की भी बलि दे देते हैं और उनके परिवारों का भरण-पोषण करने वाले भी पर्याप्त मिल जाते हैं और हमारे यहां भी साधारण बातों के प्रचार और उसके प्रदर्शन पर करोड़ों खर्च करने वाले मिल जाते हैं, परन्तु वेद के इस ठोस कार्य के लिए सहयोग करने में वह रुचि नहीं, जो होनी चाहिए, अन्यथा अब तक कितने भामाशाह यहां भी जुड़ गए होते।

वेदाभिमानी ही जगेगा

आज एक समस्या यह भी आती है कि अनेक लोगों को हमारा विषय ही बहुत कठिन प्रतीत होता है, जो उनकी समझ में नहीं आता। इस कारण जो हमारे कार्य को पूर्णतः समझे बिना दान करते हैं, उसके लिए वे बहुत बधाई के पात्र हैं। वे

वर्षों से दान कर रहे हैं, यह बड़े सुखद आश्चर्य की बात है, फिर भी मैं अपने सभी आर्य समाजियों एवं पौराणिकों से यह कहना चाहूँगा कि आप सबने वेद को अब तक सामान्य व्यवहार, कर्मकाण्ड एवं मनोरंजन का साधन माना, ऐसा मानते-2 हजारों वर्ष बीत गए। ऋषि दयानन्द के जगाने पर भी डेढ़ सौ वर्षों से सो रहे हैं। यह सत्य है कि आर्य समाज एवं अन्य हिन्दू क्रान्तिकारियों ने अनेकों क्रान्तिकारी कार्य किए परन्तु **वैदिक विज्ञान को जानने में तो सोते ही रहे न? सम्पूर्ण देश बौद्धिक दास बन गया, समाज छुपा हुआ नास्तिक एवं पाश्चात्य भक्त बन गया, हमारी सन्तान हमारे देखते-2 मैकाले की पुजारी बन गई, सब ओर से हमारे ऊपर बौद्धिक आक्रमण होते रहे और हो रहे हैं, हमारे देश के न्यायालयों व सरकारों ने भारत के वैदिक सांस्कृतिक मूल्यों को तार-तार करने वाले निर्णय लिए, राजनीति ने समाज को छिन्न-भिन्न किया, तब भी हमारी नींद नहीं खुली, इसे दुर्भाग्य नहीं कहें, तो और क्या कहें?** वेदविज्ञान अगर आपकी समझ में नहीं आता है, तो यह दोष वेदविज्ञान अथवा मेरा नहीं है, बल्कि दोष भारत के भाग्य का है, जहां वैदिक विज्ञान ऐसा लुप्त हो गया कि मैं खोज कर लाया और देश को देने का प्रयास किया, तो उसे पहचानने वाले कम वा नगण्य हैं।

कोई-2 उच्च पदासीन आर्य विद्वान् भी वेदों के व्याख्यान रूप ब्राह्मण ग्रन्थों को इतिहास का विषय बतला देते हैं, तो कोई-2 पौराणिक बन्धु वेद में भी इतिहास निकालने का प्रयास करते हैं। कोई नहीं सोचता कि यदि ब्राह्मण ग्रन्थों में मानव इतिहास है, तो वेद भी इतिहास का ग्रन्थ ही सिद्ध हुआ, तब क्या परमात्मा मानव इतिहास लिखेगा? कोई-2 विद्वान् कह देते हैं कि विज्ञान हमारा विषय नहीं, तब सब सत्य विद्याओं अर्थात् विज्ञान का ग्रन्थ वेद कैसे आपका विषय हो गया? यदि वेद भी आपका विषय नहीं, तब कैसे कहें, ऐसे महानुभावों को वैदिक विद्वान्? हां, वे विद्वान् अवश्य हैं परन्तु अपने वेदेतर किसी ग्रन्थ के। ऐसे क्रूर काल में अविद्या के इस गाढ़े अन्धकार में कुछ सौभाग्यशाली महानुभाव, जिनके अन्दर वेदों, देवों एवं

ऋषियों के प्रति सच्ची श्रद्धा होगी, **जिन्हें अपनी शिराओं में भगवान् राम और भगवान् कृष्ण जैसे महान् पूर्वजों का पवित्र रक्त बहता हुआ प्रतीत होगा, जिनके हृदय में माँ भारती और माँ मानवता को बचाने की गहरी तड़प होगी, जिन्हें राष्ट्रीय एवं आत्म स्वाभिमान के साथ जीने की प्रबल लालसा होगी, वे ही हमारे साथ बिना किसी की चिन्ता किए जुड़ते चले जायेंगे और हमें ऐसे व्यक्तियों को ही साथ लेने में ही आनन्द होगा।**

मित्रो! जिस मैकाले ने भारत को बौद्धिक दास बना दिया, उसके साथ सम्पूर्ण ब्रिटिश साम्राज्य था अर्थात् विश्व की सर्वोच्च सत्ता उसके साथ थी और विश्व के सर्वोच्च संसाधन भी उसके साथ थे, और आज भी हैं। कथित स्वतन्त्रता के बाद से आज तक भारत की प्रान्तीय और केन्द्रीय सरकारें भी उसके साथ रहीं। इस पर भी मैकाले व उसके दासों को भारत को बिगाड़ने में लगभग डेढ़ सौ वर्ष लग गए। उधर मैं एकाकी अब तक कुछ सहयोगियों के साथ और अपने शिष्य प्रिय विशाल आर्य के साथ मैकाले की अनिष्टकारी व्यवस्था को ध्वस्त करने का स्वप्न देख कर आगे बढ़ चला हूँ, **जो मैकाले का भक्त है, वह हमारे साथ नहीं आयेगा और जो सच्चा वेद व राष्ट्रभक्त है, वह अवश्य आयेगा।** मैकाले को संसार ने भरपूर साथ दिया और दे रहा है, हमें कौन-2 साथ देंगे? यह समय ही बतायेगा। आर्य समाज, समस्त हिन्दू समाज, भारत एवं संसार को निर्णय करना है। हमारा मार्ग निश्चित है, जिसको हमारे साथ यात्रा करनी है, वह हमारे साथ आए, अन्यथा मूकदर्शक बने रहें। यद्यपि आप सबके साथ के बिना निश्चित ही हमारा स्वप्न पूरा नहीं होगा परन्तु हमें जीवन के अन्तिम समय में पश्चाताप तो नहीं होगा कि परमात्मा द्वारा बुद्धि दिये जाने के पश्चात् भी वेद, राष्ट्र एवं विश्व के लिए हमने कोई प्रयास नहीं किया, और हमें यह भी नहीं लगेगा कि जिन्होंने हमें इस कार्य के लिए अपना पवित्र धन दान में दिया, उस धन का हमने सदुपयोग नहीं किया। वैसे भी मनुष्य के हाथ में केवल कर्म है, फल तो ईश्वराधीन है, जैसा कि योगेश्वर श्रीकृष्ण महाराज ने कहा है-

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन

हम इसी आदर्श को लेकर निरन्तर बढ़ते रहे हैं और बढ़ भी रहे हैं। स्वप्न पूर्ण हो वा नहीं परन्तु हमें और इस कार्य में सहयोग करने वालों को परमेश्वर की कृपा का प्रसाद अवश्य मिलेगा। आज महान् धर्मयुद्ध में हमने अपनी भूमिका निश्चित कर ली है, अब आपको अपनी भूमिका निश्चित करनी है।

मैं हूँ आपका चौकीदार

अन्त में आप सभी से यह निवेदन अवश्य है कि मैंने इस लेख में जो भी लिखा है, उसका उद्देश्य किसी के हृदय को ठेस पहुँचाना वा अपमानित करना नहीं है। मैं तो सभी आर्य विद्वानों, संन्यासी-वानप्रस्थी महानुभावों, भजनोपदेशकों व सभी आर्यजनों के साथ-2 पौराणिक (कथित सनातनी), वैदिक विद्वान्, वेदपाठियों, राष्ट्र के शुभचिन्तकों व मानवता से प्यार करने वाले महानुभावों का तथा उन वैज्ञानिकों, जो वर्तमान विज्ञान को यथार्थपरक तथा समस्त मानव जाति के लिए कल्याणकारी बनाना चाहते हैं, जो वर्तमान भौतिकी की वास्तविक अनसुलझी समस्याओं का समाधान करना चाहते हैं, चौकीदार हूँ, जो कथित नास्तिक मानवताविध्वंसक वैज्ञानिकों व राष्ट्रविरोधी कथित प्रबुद्धों के प्रहार से आप सबकी रक्षा करना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि संस्कृत व्याकरण, दर्शन एवं वैदिक विद्वानों में एक वैज्ञानिक ज्योति जगे, जिससे उन्हें विश्व में वह सम्मान मिले, जो ब्रह्माण्डीय विज्ञान एवं भाषा के विद्वान् को मिलना चाहिए। संस्कृत भाषा, विशेषकर वैदिक भाषा को ब्रह्माण्डीय भाषा सिद्ध करना, आर्ष गुरुकुलों को वैज्ञानिकों का तीर्थ बनाने का स्वप्न देखता हूँ। वेदपाठियों के परम्परागत वेदपाठ को सृष्टि विज्ञान को समझने का महत्वपूर्ण भाग बनाना चाहता हूँ। सम्पूर्ण भारत व विश्व में सामाजिक समरसता लाना चाहता हूँ। वर्तमान भौतिकी को नई ऊँचाई पर ले जाकर उसे प्राणिमात्र के लिए हितकारिणी बनाने का मेरी प्रबल इच्छा है, जिससे सम्पूर्ण विश्व एक परमपिता परमात्मा का परिवार बन सके, बताइए, आपको इसमें विरोध कहाँ? मैं आप हिन्दुओं को तो क्या,

मैं तो विश्व भर के अन्य मतावलम्बियों को भी उनके मूल से पीछे ले जाकर सबके मूल वेद की ओर लाकर मानवमात्र को एकसूत्र में बांधना चाहता हूँ, उनमें भी वैज्ञानिक सोच विकसित करना चाहता हूँ।

आप सभी मेरे हैं और आप सबका भी मुझ पर पूर्ण अधिकार है। कहीं मतभेद हैं, तो उन्हें परस्पर प्रीतिपूर्वक मिल बैठकर दूर करने का प्रयास करना चाहिए। उन्हें सार्वजनिक नहीं करना चाहिए। यदि मतभेद दूर नहीं भी हों, तब भी मनभेदों को पास में नहीं आने देना चाहिए। अन्ततः हमारे आप सबके स्वप्न तो एक ही हैं, इसलिए उठो! अपने स्वप्नों को साकार करने के लिए एक होकर मिलकर प्रयास करो, केवल सत्य ही हमारा साधन हो सकता है। यदि हमने सत्य को अस्वीकार कर दिया, वेद का तिरस्कार कर दिया, तो हमें सर्वनाश से कोई नहीं बचा सकता। ईश्वर सबको सुमति दे और सबकी रक्षा करे।

इसी कामना व भावना के साथ
आप सबका अपना ही
आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक

वैदिक भौतिकी के विषय में कुछ महत्वपूर्ण लेख

क्या वेद शान्ति-समृद्धि की गारण्टी है?

विज्ञान की उन्नति मनुष्य जीवन को सुखी बनाने के लिए की जाती है। विज्ञान का अध्ययन भी बढ़ रहा है, विज्ञान की उन्नति भी हो रही है और साथ-साथ मनुष्य जीव अधिक से अधिक दु:खी निराश, रोगी, तनावपूर्ण, अनिश्चित होता जा रहा है। तो यह कहने में क्या सन्देह रह जाता है कि विज्ञान की उन्नति सुखी जीवन की गारण्टी नहीं है। ऐसा क्यों हो रहा, है? इसका कारण है विज्ञान की उन्नति वा दुरुपयोग। विज्ञान के दुरुपयोग का कारण है, लालच व स्वार्थ। लालची व स्वार्थी विज्ञान की प्रत्येक उपलब्धि को शोषण का हथियार बना लेते हैं। शोषण व अन्याय से जीवन को दु:खी बनाने वाली सभी बीमारियाँ पैदा होती हैं। विज्ञान की किसी भी शाखा में स्वार्थ व लालच को हटाने, कम करने या बचने का कोई सूत्र या उपाय नहीं है।

मनुष्य को लालच व स्वार्थ से बचाने का उपाय वेद के अतिरिक्त और कहीं नहीं है। दूसरे विषय व मत-पंथ भी उपचार नहीं हैं, क्योंकि मानव निर्मित मत-पंथ व अन्य विषय सार्वभौतिक, सार्वकालिक और सार्वजनिक नहीं हो सकते। कहीं न कहीं मतभेद होने पर संघर्ष पैदा होगा, परिणामस्वरूप लालच व स्वार्थ भी काम करने लगते हैं। इसका कारण है, मानव बुद्धि का सीमित होना। वेद ईश्वरप्रदत होने के कारण सार्वभौमिक, सार्वकालिक व सार्वजनिक भी है और वेद की बातें निर्दोष भी हैं। दूसरी विशेषता यह है कि वेद में विज्ञान सहित मानव उपयोगी सभी क्षेत्रों के दिशा निर्देश हैं। यह सम्पूर्णता किसी अन्य विषय में, विज्ञान में या किसी भी मत-पथ में नहीं है। वेद मनुष्य को सभी क्षेत्रों का उचित मार्गदर्शन देकर मनुष्य को स्वार्थ व लालच से बचा सकता है। स्वार्थ व लालच से मुक्ति होने पर मानव जीवन का सुखी, शांत व समृद्ध होने में कोई सन्देह नहीं रहता। यहाँ मेरा सभी मत-पथ के

भाईयों से निवेदन है कि वे इस बात को ध्यान में रखें कि वेद किसी की बपौती नहीं है, वेद सभी मनुष्यों के लिये है।

यह उपलब्धि तभी होगी, जब मनुष्य वेद का अध्ययन करेगा। वेद अध्ययन तभी से हो पायेगा, जब यह तसल्ली हो जाए कि वेद में सभी प्रकार का ज्ञान है और ईश्वरीय ज्ञान है, इसमें दोष वा अधूरापन नहीं हो सकता। दीर्घकाल से (5000) वर्षों से वेद की ठीक समझ न होने के कारण वेद की प्रतिष्ठा लगभग शून्य हो गई, जिसके कारण वेद का अध्ययन व शोध बन्द हो गया। मानवता के सौभाग्य से महाभारत काल के बाद महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती आये थे, जो वेद को प्रत्येक दृष्टि से स्थापित करने में समक्ष थे, पर मानवता का सौभाग्य अधिक न टिक सका और महर्षि की हत्या कर दी गई।

एक बार फिर मानवता का भाग्योदय हुआ है और परमात्मा की अनुकम्पा, वेद मनीषी आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक के माध्यम से प्रकट हुई है। आचार्य जी ने घोर परिश्रम व तप करके ऋग्वेद के ब्राह्मण ग्रन्थ ऐतरेय ब्राह्मण से विज्ञान निकाल कर एक बृहत् ग्रन्थ (2800) पृष्ठ 'वेदविज्ञान-आलोकः' की रचना की है। यह ग्रन्थ वैज्ञानिकों को वेद में विज्ञान मानने के लिये विवश करेगा, जिससे वेद की मान्यता स्थापित होगी और वेद अध्ययन की ओर मनुष्य आकर्षित होगा। यह ग्रन्थ वेद की स्थापना के साथ एक और महत्वपूर्ण कार्य यह करेगा कि वेद को अपौरुषय अर्थात् ईश्वरीय ज्ञान होना सिद्ध करेगा। एक बार मनुष्य के हृदय व मस्तिष्क में यह स्पष्ट हो जाता है कि वेद ईश्वरीय है, ईश्वर न्यायकारी, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान् व कर्मफल दाता है, तो कोई गलत कार्य नहीं करेगा, क्योंकि वह जानता है कि गलत कर्म का फल दुःख है और ईश्वर के न्याय में कोई त्रुटि हो नहीं सकती, तो वह व्यक्ति गलत कार्य से बच जायेगा, क्योंकि कोई भी दुःखी होना नहीं चाहता। जब शोषण-अन्याय जैसे गलत कार्य नहीं होगें, तो जीवन शान्तिमय व समृद्ध अपने आप हो जायेगा।

तो आचार्य अग्निव्रत जी का कार्य वेद में विज्ञान होने के साथ ईश्वर अस्तित्व

को सिद्ध करके वेद की स्थापना करेगा, जिससे मानवमात्र का जीवन शान्तिमय व समृद्ध होगा। वर्तमान में मानवता के लिए आचार्य अग्निव्रत के कार्य से महत्वपूर्ण दूसरा कार्य नहीं हो सकता। आचार्य जी ने शान्ति व समृद्धि का मार्ग बना दिया है, इस कार्य को आगे बढ़ाना, इसमें सहयोग करना मानवता की सबसे बड़ी सेवा होगी। आचार्य जी का कार्य ईश्वर की ओर से मानवता को उपहार है। ईश्वरीय उपहार का सम्मान कल्याण का मार्ग है और तिरस्कार विनाश को बुलावा है। यह वर्तमान मानव और विशेषकर हम भारतवासियों पर निर्भर है कि ईश्वरीय उपहार का आदर करके सुखी होना चाहतें है या उपेक्षा करके नारकीय जीवन होना चाहते हैं।

क्या वेद में विज्ञान है ?

वेद में विज्ञान के साथ-साथ सभी प्रकार का ज्ञान सूत्ररूप में विद्यमान है और भारत देष वेदविद्या के कारण विश्वगुरु रहा है, ऐसा हम बहुत लम्बे काल से सुनते व पढ़ते आये हैं। वेद विद्या के कारण हम विश्वगुरु थे, तो हजारों वर्षों की गुलामी क्यों भोगनी पड़ी और अब वेदविद्या के बल पर विश्व में अग्रणी क्यों नहीं बने ? इसके उत्तर में यदि कहा जाता है कि वेद की गलत समझ के कारण और ठीक समझ का प्रयास न करने के कारण वर्तमान स्थिति बनी, तो जन साधारण के साथ बुद्धिजीवी व वैज्ञानिकों के मस्तिष्क में केवल इतनी बात ही आती है कि वेद में धर्म व समाज की बातों के साथ कुछ विज्ञान सम्बन्धित सामान्य बातें जैसे आयुर्वेद, हवन आदि की बातें तो हो सकती हैं पर विज्ञान की सैद्धान्तिक बातें, जिनका फिजिक्स, गणित, रसायन आदि के सूत्रों से सम्बन्ध है और जो सृष्टि की प्रत्येक गतिविधि वा क्रियाकलाप की व्याख्या करती है, ऐसा विज्ञान वेद में कहाँ है ? सम्भवतः नहीं है।

वेदविज्ञान से पहले वर्तमान में जिसको विज्ञान माना जाता है, उसको जान लेना भी आवश्यक है। यों तो विज्ञान की अनेकों शाखायें हैं, पर सबसे महत्वपूर्ण और आधारभूत विज्ञान भौतिकी (फिजिक्स) है। भौतिकी में भी सबसे जटिल और

आधारभूत शाखा कण भौतिकी (पार्टिकल फिजिक्स) है, जिसमें सृष्टि के मूल कणों और विभिन्न बलों (फोर्स) के बारे अध्ययन किया जाता है। भौतिकी विकास की यात्रा को भी थोड़ा जान लें। भौतिकी के साथ ही विज्ञान की अन्य शाखाओं की विकास यात्रा का इतिहास (आधुनिक विज्ञान) लगभग 350 वर्षों में आ जाता है। भौतिकी की 350 वर्षों की यात्रा लगभग इस प्रकार रही। सत्तरहवीं शताब्दीं के मध्य से (न्यूटन, गैलीलियो, डिकार्टे, लाप्लास) उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तक भौतिकी में क्लासिकल यान्त्रिकी (गति के नियम, गुरुत्वाकर्षण बल) का मुख्य रोल रहा और इसको विश्व की यान्त्रिकी व्याख्या का युग कहते हैं। इसके बाद बीसवीं शताब्दी की दूसरी दशाब्दी तक (हाईजन, मैक्सवैल, थामस यंग, हट्र्ज, फ्रेजनल) विश्व घटनाओं की व्याख्या विद्युत् चुम्बकीय बलों के माध्यम से की जाने लगी और यह समय विश्व के विद्युत् चुम्बकीय मॉडल का समय रहा।

बीसवीं शताब्दी की तीसरी दशाब्दी से सातवीं दशाब्दी तक का समय (मैक्स प्लांक, आईन्स्टाईन, डी ब्रोग्ली, हेजनवर्ग, नील्स बोहर, रुदरफोर्ड) क्वांटम यान्त्रिकी व सापेक्षता का समय रहा और इस काल अवधि में घटनाओं की व्याख्या क्वांटम और सापेक्षता सिद्धान्तों के माध्यम से होने के कारण क्वांटम यान्त्रिकी मॉडल का समय कहलाया। इसी समय 1928 में पॉल डिराक ने इलेक्ट्रॉन की गति व ऊर्जा के लिये सापेक्षता सिद्धान्त के साथ समीकरण निकाला, तो ऊर्जा के दो उत्तर आये एक धन ऊर्जा के लिये और दूसरा ऋण ऊर्जा के लिये। चौथी दशाब्दी के साथ ब्रिटिश भौतिकविद् पॉल डिराक ने विचार दिया कि जिसको हम शून्य (वैक्यूम) कहते हैं, वह वास्तव में शून्य न होकर पदार्थ व ऊर्जा का अक्षय भण्डार है। तब से लेकर वर्तमान तक भौतिकविद् इस वैक्यूम के गुण धर्म समझने, वैक्यूम का वास्तविक जगत् के कणों व बल क्षेत्रों के साथ क्या सम्बन्ध है? यह जानने का प्रयास किया जा रहा है। वैक्यूम का विस्तृत स्तर पर खगोलीय घटनाओं पर प्रभाव के अध्ययन में डार्क मैटर व डार्क एनर्जी की बात जोड़ी जाती है। वैक्यूम के गुण धर्म व क्रियाओं को लेकर भौतिकविदों के पाँच-छः तरह के विचार हैं। सभी भौतिकविद् (पॉल

डिराक, जी.आई. नान, ए.ए. ग्रीव, जॉन व्हीलर, स्टीवन वेनबर्ग, अब्दुल सलाम) एक थ्यौरी पर सहमत नहीं हैं। यह समय विश्व के अध्ययन का वैक्यूम मॉडल कहलाता है। विज्ञान की परिवर्तित होती थ्यौरीज के बारे प्रसिद्ध भौतिकविद् रिचर्ड फीनमेन कहते हैं कि वैक्यूम की पाँच-छः प्रकार थ्यौरीज के बारे में अपने-अपने तर्क हैं। प्रसिद्ध वैज्ञानिक अलबर्ट आईन्स्टीन के अनुसार विज्ञान की कोई भी थ्यौरी अन्तिम नहीं कही जा सकती। नोबेल पुरस्कार विजेता डी ब्रोग्ली के अनुसार विज्ञान की नई थ्यौरी जितनी समस्यायें सुलझाती हैं, उससे कहीं अधिक नई समस्यायें सामने लाती हैं।

तो जब विज्ञान की उच्चतम शाखा भौतिकी के सामने वर्तमान में मूल कणों, विभिन्न बलों उनके क्षेत्रों, सृष्टि प्रक्रिया व वैक्यूम के बारे भिन्न-2 मत हैं और वर्तमान में कण भौतिकी बहुत सी समस्याओं का सामना कर रही है, ऐसे समय में यदि कोई वेद से विज्ञान निकाल कर भौतिक विज्ञान की समस्याओं का समाधान करे, भौतिकी को नई दिशा दे, तो वेद में विज्ञान मानने में क्या संदेह रह जायेगा? सन्देह करने वाले वैज्ञानिकों के सामने प्रश्न किये जायें और उनसे उत्तर न दिये जाने पर उन प्रश्नों का उत्तर दिया जावे, तो उन वैज्ञानिकों के सामने वेद में विज्ञान मानने के अतिरिक्त क्या विकल्प रह जाता है?

वर्तमान में एक वेदविज्ञानी मनीषी ने ऋग्वेद के ब्राह्मण ग्रन्थ ऐतरेय ब्राह्मण से वर्तमान भौतिकी समस्याओं को हल करने वाला एवं विज्ञान को नई दिशा देने वाला विज्ञान निकाला है। वैज्ञानिकों के सामने (उच्च स्तर के भौतिकविद् व नोबेल पुरस्कार विजेता) एक सौ प्रश्न रखे हैं। प्रश्न ही नहीं, उनके समाधान की घोषणा भी की है। क्या यह वेद की स्थापना और यह वेद के उद्गम स्थान भारतवर्ष के लिए गौरव की बात नहीं है?

एक और आश्चर्यजनक तथ्य सामने आया है। आस्ट्रिया के प्रसिद्ध भौतिकविद् विक्टर नाइसकॉफ (1908-2002) ने एक ऑकलन किया कि दुनिया में केवल

विज्ञान के सैद्धान्तिक शोध पर 1971 तक लगभग 30 अरब डालर धन खर्च हुआ। यह खर्च प्रत्येक 10 वर्ष के बाद दुगना हो जाता है। इस प्रकार वर्तमान दशाब्दी का खर्च 960 अरब डालर बनता है। सारे विश्व में सैद्धन्तिक भौतिकी के शोध में दस हजार से अधिक वैज्ञानिक कार्यरत हैं। हमारे वेदमनीषी ने दस हजार शोधार्थियों के मुकाबले अकेले ने कुल (960 अरब डालर) के 34 लाख वें हिस्से के बराबर खर्च में वेद से उच्चस्तर का विज्ञान निकालकर दिखाया है।

यदि खर्च की दृष्टि से देखें, तो विश्व के कुल 208 देशों में से हम केवल 100 देश लें और बाकी को छोड़ दें, तो प्रत्येक देश के हिस्से शोध का दस वर्ष का खर्च 672 अरब रु. आता है। एक वर्ष का खर्च 67.2 अरब हुआ। भारत विश्व के 100 देशों के मुकाबले बहुत बड़ा देश है, फिर भी छोटे देशों के बराबर हिस्सा मानें, तो सैद्धान्तिक विज्ञान पर वार्षिक खर्च 67.2 अरब रु. है। इस खर्च का दसवां भाग अर्थात् 6.7 अरब रु. वार्षिक भी हम वेद के शोध पर खर्च करें, तो आश्चर्यजनक परिणाम आ सकते हैं। यह देशवासियों के लिये और वर्तमान सरकार, जो वेद को हमारी संस्कृति का आधार मानती है, के लिये अद्भुत अवसर है, तो हम ऐसे वेदमनीषी को भरपूर सहयोग देकर वेद की प्रतिष्ठा को बचालें अन्यथा वेद नहीं रहेगा, तो हमारी संस्कृति नष्ट हो जायेगी और यदि संस्कृति नष्ट हो गई, तो हम गुलामों का टोला बनकर रह जायेंगे। विदेशी लोग बड़े सयाने हैं (तभी तो हम उनके गुलाम रहे), यदि हम इस वेद मनीषी जैसी मूल्यवान् धरोहर को नहीं सम्भाल पाये, तो विदेशी लोग किसी प्रकार इस शोध का लाभ भी लेंगे और वेद का नाम भी नहीं लेंगे।

सम्पूर्ण मानवता की दृष्टि से देखें, तो जिस अधिकारपूर्वक यह वेद विज्ञानी वैज्ञानिकों के सामने वेद के विज्ञान का प्रदर्शन कर रहा है, इसी प्रकार चुनौतीपूर्वक मैं भी कह सकता हूँ कि जब तक विज्ञान को वेद का मार्गदर्शन नहीं मिलता, तब तक विज्ञान कितनी ही उन्नत्ति कर ले, मानव को सुखी नहीं बना सकता।

ये वेद मनीषी, जो वर्तमान समय के महानतम वेद वैज्ञानिक हैं, कोई और

नहीं, श्रद्धेय आचार्य अग्निव्रत जी नैष्ठिक हैं, जो श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास, भागल भीम (भीनमाल) जालोर, राजस्थान के एक छोटे से स्थान पर रह कर अति अल्प साधनों के साथ घोर तप करके ऐतरेय ब्राह्मण ग्रन्थ से विशाल विज्ञान को निकाल कर 'वेदविज्ञान-आलोकः' नामक ग्रन्थ (2800 पृष्ठ) जन भाषा (हिन्दी) में दिया है। 'वेदविज्ञान-आलोकः' ग्रन्थ महान् वैज्ञानिक न्यूटन के ग्रन्थ 'प्रिन्सीपिया' से भी महत्वपूर्ण है। महाभारत काल से वर्तमान तक के 5000 वर्षों में एक महर्षि दयानन्द सरस्वती ऐसे वेद मनीषी थे, जो वेद को प्रत्येक दृष्टि से स्थापित कर सकते थे, पर हमारा दुर्भाग्य कि हम गुलाम थे, अंग्रेज ने उनकी हत्या करवा दी। ऋषि के बाद वर्तमान में आचार्य अग्निव्रत के माध्यम से हमारा भाग्य उदय हुआ है। वैदिक फिजिक्स यू-ट्यूब चैनल के माध्यम से प्रबुद्ध लोगों को वैदिक विज्ञान से जोड़ने का कार्य आचार्य जी अपने सीमित साधनों से कर भी रहे हैं। हम और हमारी सरकार यदि, वेद भक्त हैं, देशभक्त हैं और अपनी संस्कृति से प्रेम है, तो आचार्य अग्निव्रत के वेद को प्रतिष्ठित करने जैसे ठोस और महत्वपूर्ण कार्य में भरपूर सहयोग दें, यह अद्भूत अवसर है।

वैज्ञानिक कौन?

विज्ञान क्रमबद्ध तथ्यों पर आधारित तर्कसंगत जानकारी का नाम है। जानकारी के क्षेत्र भिन्न-भिन्न होने से विज्ञान की अनेक शाखायें बन जाती हैं। जानकारी प्राप्त करने के तरीके भिन्न हो सकते हैं। सभी शाखाओं में, सभी तरीकों में एक बात सामान्य होगी और वह है जानकारी का तर्कसंगत होना। तर्कसंगत जानकारी का नाम ही विज्ञान है, तो तर्कसंगत जानकारी का अध्ययन, उसका संग्रह, उसका संवर्धन करने वाला व्यक्ति वैज्ञानिक हुआ। इस कारण वैज्ञानिक होने की आवश्यक व मूलभूत शर्त हुई तर्कसंगत विचार प्रक्रिया। जिस व्यक्ति की विचार शैली तर्कसंगत है, वह व्यक्ति वैज्ञानिक कहला सकता है। विज्ञान की किसी शाखा की अच्छी भली जानकारी

हो, उस शाखा से सम्बन्धित बड़ी से बड़ी डिग्री या उपाधि भी हासिल की हो परन्तु विचार प्रक्रिया तर्कसंगत नहीं है तो, वह उपाधिधारी व्यक्ति वैज्ञानिक नहीं है। विज्ञान के किसी विषय की बड़ी सारी डिग्री होना, वैज्ञानिक होने का प्रमाण नहीं है, अपितु वैज्ञानिक विचार एवं प्रक्रिया होना ही वैज्ञानिक होने का प्रमाण है। इतिहास में बहुत सारे उदाहरण हैं जहाँ विज्ञान की किसी औपचारिक डिग्री के बिना ही बहुत बड़े वैज्ञानिक हुये हैं, जैसे जोहन डॉल्टन, माईकल फैराडे, थाम्स एलवा एडिसन, आईन्स्टीन आदि। एक बात और अनिवार्य है वैज्ञानिक होने के लिये कि अपने विषय के अतिरिक्त दूसरे क्षेत्रों में भी उस व्यक्ति की सोच तर्कसंगत होनी चाहिए। मैं बहुत सारे व्यक्तियों को जानता हूँ, जिनके पास अपने विषय की बहुत बड़ी डिग्रियां तो हैं, पर दूसरे विषयों में उनकी सोच तर्कसंगत नहीं है, तो ऐसे उच्च डिग्रीधारी व्यक्तियों को वैज्ञानिक नहीं माना जा सकता।

वैज्ञानिक होने के लिये तर्कसंगत विचार प्रक्रिया होना तो मूलभूत शर्त है ही, इसके साथ एक अनिवार्यता और है जो वैज्ञानिक की कोटि (Leval) निर्धारित करती है, वह अनिवार्य शर्त है, दूरदृष्टि। वैसे यह शर्त एक वैज्ञानिक के साथ एक राजनेता व एक समाज सुधारक पर भी लागू होती है, पर वैज्ञानिक के लिये यह सबसे आवश्यक है, क्योंकि वैज्ञानिक के कार्य का प्रभाव बहुत दूरगामी होता है। जितना बड़ा वैज्ञानिक अर्थात् जितना महत्वपूर्ण विज्ञान का कार्य, उतनी ही अधिक दूरदृष्टि होना अनिवार्य है। कितनी ही बड़ी वैज्ञानिक खोज किसी वैज्ञानिक ने कर डाली हो, पर यदि वह दूरदृष्टि वाला नहीं है, तो उस वैज्ञानिक को बड़ा वैज्ञानिक कहने में एक बाधा यह आ जायेगी कि उस खोज से मानवता की हानि होगी, तो उसे बड़ा वैज्ञानिक कहना कठिन हो जायेगा। कम से कम यदि उसको बड़ा वैज्ञानिक मान भी लें, तो अच्छा वैज्ञानिक या अच्छा व्यक्ति कहना तो अवश्य मुश्किल होगा।

विज्ञान का उद्देश्य मानव जीवन को सुखी बनाना है। यदि विज्ञान जीवन को दुखदायी या संकटग्रस्त बना दे, तो ऐसे विज्ञान और उस वैज्ञानिक का स्वागत तो

नहीं किया जा सकता। उदाहरण के लिये रासायनिक खेती, जिसने 20–30 वर्ष में जमीन को बंजर बना दिया और जनता को कैन्सर का तोहफा दिया। आरम्भिक वर्षों में उत्पादन बढ़ा कर हरित क्रान्ति कहा गया। अब वही वैज्ञानिक रासायनिक खेती छोड़ कर जैविक खेती की बात कर रहे हैं, जो खेती पहले की ही जाती थी। इन वैज्ञानिकों को 20–30 वर्ष आगे का दिखाई नहीं दिया, तो इनको वैज्ञानिक कैसे कहें? अब जनेटिकली परिवर्तित बीजों की बात हो रही है, वायरसों को परिवर्तित किया जा रहा है, जिसके मानवता के लिये घातक परिणाम हो सकते हैं। पॉलीथीन की खोज पर यह विचार कहाँ किया गया था कि कुछ वर्षों बाद पॉलीथीन का कचरा पर्यावरण के सामने विकट संकट खड़ा करेगा। परमाणु बम्ब बनाने वाले वैज्ञानिकों ने कहाँ विचार किया था कि परमाणु हथियार सम्पूर्ण मानवता की नींद हराम कर देंगे। संचार, क्रान्ति में जुटे वैज्ञानिकों को कहाँ पता है कि संचार की तीव्र होती टैक्नोलॉजी मानवता के लिए एक भंयकर अभिशाप बनकर हमारे परिवेश को सुनसान बना देगी।

यहाँ यह कहें कि इसमें वैज्ञानिकों का दोष कहाँ है, यह तो विज्ञान का दुरुपयोग करने वालों का दोष है, तो यह तो मानना ही पड़ेगा कि एक वैज्ञानिक की तार्किक बुद्धि किसी राजनेता, किसी धनपति या जन साधारण से अधिक होती है, तो किसी वैज्ञानिक खोज के भविष्य में होने वाले अच्छे–बुरे परिणामों का आकलन तो वैज्ञानिक को करना ही चाहिए, यदि वह ऐसा नहीं करे वा कर सके, तो कम से कम वह उच्च कोटि का वैज्ञानिक तो नहीं कहला सकेगा।

हम उपर्युक्त वैज्ञानिकों की वैज्ञानिकता व उनकी ईमानदारी पर सन्देह नहीं कर रहे। वास्तव में समस्या यह है कि लगभग सभी वैज्ञानिक भौतिकवादी दर्शन के प्रभाव में रहे हैं। आधुनिक विज्ञान केवल जड़ पदार्थ का अध्ययन करता है। कुछ वैज्ञानिक कहने को अध्यात्मिक दर्शन की बात कर लेते हैं, पर इस दर्शन की ठीक से समझ न होने के कारण उनकी कार्यशैली भौतिकवादी ही रहती है, जिस कारण

वे दूरगामी प्रभावों के बारे में नहीं सोच सकते। इस कारण प्रत्येक वैज्ञानिक तार्किक सोच के साथ दूरदृष्टि वाला भी हो और उसकी प्रत्येक वैज्ञानिक उपलब्धि के साथ मानवहित व भविष्य की सुरक्षा भी जुड़ी हो, इसके लिये उसको विज्ञान के साथ आध्यात्मिक विज्ञान का ज्ञान होना अति आवश्यक है। वर्तमान विज्ञान को इसकी महती आवश्यकता है। आचार्य अग्निव्रत जी नैष्ठिक का 'वेदविज्ञान-आलोक:' ग्रन्थ आधुनिक विज्ञान को न केवल वैज्ञानिक मार्गदर्शन दे सकता है, अपितु आध्यात्मिक मार्गदर्शन देकर भविष्य को सुखद व सुरक्षित भी बना सकता है। 'वेदविज्ञान-आलोक:' सच्चा विज्ञान है और इसके रचनाकार आचार्य अग्निव्रत जी सच्चे अर्थों में वैज्ञानिक हैं।

लेखक

डॉ. भूपसिंह
रिटायर्ड एसोशिएट प्रोफेसर, भौतिक विज्ञान
भिवानी (हरियाणा)

विशेष निवेदन

यह कार्य अत्यन्त पवित्र है, इस कारण आचार्य श्री की भावनानुसार विनम्र निवेदन है कि जिनकी आजीविका किसी भी प्रकार की हिंसा, चोरी, तस्करी, अश्लीलतावर्धक साधनों, नशीली वस्तुओं की विक्री, धोखाधड़ी, शोषण आदि पर निर्भर हो तथा जो निर्धन भाई अपनी सामर्थ्य से अधिक (अथवा अपने परिवार में क्लेश करके) दान देना चाहते हों, ऐसे महानुभावों की सद्भावना का धन्यवाद करते हुए भी हम उनका दान लेने में असमर्थ हैं। कृपया ऐसा करने का प्रस्ताव करके हमें लज्जित न करें। हाँ, जो बन्धु ऐसे कर्मों को त्यागकर हमसे जुड़ना चाहें, तो उनका हार्दिक स्वागत है।

Bank Name	**Punjab National Bank**
A/c Holder	Shri Vaidic Swasti Pantha Nyas
A/c Number	4474000100005849
Branch	Bhinmal
IFS Code	PUNB0447400

या

Bank Name	**State Bank of India**
A/c Holder	Shri Vaidic Swasti Pantha Nyas
A/c Number	61001839825
Branch	Khari Road, Bhinmal
IFS Code	SBIN0031180

आप अपना चैक/ड्राफ्ट/धनादेश, '**श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास**' PAN AAATV7229A के नाम (केवल खाते में देय) भेजने का कष्ट करें, साथ ही अपना नाम व पता साफ अक्षरों में लिखकर अवश्य भेजने की कृपा करें। आप ऑनलाइन

भी धन जमा करवा सकते हैं परन्तु ऐसा करने वाले महानुभाव अपना नाम व पता दूरभाष द्वारा तत्काल सूचित करने का कष्ट करें, जिससे समय पर रसीद भेजी जा सके, अन्यथा हमें बहुत कठिनाई होती है।

नोट- न्यास को दिया हुआ दान आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत कर मुक्त है।

9829148400@upi

अब आप वैदिक विज्ञान के पुनरूत्थान के लिए दान Online भी दे सकते हैं।

www.vaidicphysics.org

मानवधर्म सूत्रदशक (आर्य समाज के नियम)

1. सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदिमूल परमेश्वर है।

2. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनंत, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वांतर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है, उसी की उपासना करने योग्य है।

3. वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों (श्रेष्ठ मनुष्यों) का परम धर्म है।

4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये।

5. सब काम धर्मानुसार, अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिये।

6. संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

7. सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य वर्तना चाहिये।

8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये।

9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से संतुष्ट न रहना चाहिये, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये।

10. सब मनुष्यों को सामाजिक, सर्वहितकारी, नियम पालने में परतंत्र रहना चाहिये और प्रत्येक हितकारी नियम पालने में सब स्वतंत्र रहें।

@VaidicPhysics